तृतीय अध्याय

" जैनेन्द्रकुमार की कहानियों में चित्रित विभिन्न नारी रूप "

प्रस्तावना :

जीवन का दूसरा नाम साहित्य है और साहित्य का दूसरा नाम जीवन। जीवन की सार्थकता नर और नारी के पारस्परिक सम्बन्धों पर निर्भर है। नारी पुरुषत्व का आधार है। उसके बिना मानव अपने जीवन में एक बहुत बड़े अभाव का अनुभव करता है। सम्भवत: इसीलिये हमारे देवताओं के साथ भी स्त्रियों का नाम जुड़ा रहता है। जैसे सीता राम, राधेश्याम, गौरी शंकर लक्ष्मी नारायण आदि।

"भारतीय साहित्य में नारी का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बिना उसके साहित्य सृजन ही असम्भव है। भारतीय परम्परा और हिन्दू शास्त्रों में नारी को "श्री" कहा गया है। नर के "न" और "र" दोनों ही वर्ण -ह्रस्व हैं तथा नारी के दोनों ही दीर्घ। इससे यहीं द्योतित होता है कि नारी का स्थान नर से ऊँचा है। हमारे शास्त्रों में नारी को अर्द्धांगिनी कहा गया है, इससे भासित होता है कि नारी को लेकर ही पुरुष पूर्णत्व प्राप्त कर सकता है। "प्राचीन काल में नारी को समाज में पुरुष के समान ही अधिकार एवं सम्मान प्राप्त था। उसकी उपस्थिति के बीना यज्ञ आदि धार्मिक कार्य पूर्ण नहीं होते थे। सीता की अनुपस्थिति में अश्वमेध यज्ञ करने पर राम को सीता के अभाव की पूर्ति हेतु सीता

की प्रतिमा स्थापित करनी पड़ी थी। इसीलिए समाज में नारी को शक्ति का अजस्त्र स्त्रोत तथा प्रेरणादायिनी शक्ति माना गया है।[2]

कबीर, जायसी आदि कवियों ने नारी वर्णन में ही परम प्रियतम परमात्मा की रहस्यमयी झांकी देखी। नारी शक्ति स्तवन को ही इन रहस्यवादी कवियों ने अलौकिक प्रेम तत्व के वर्णन का आधार बनाया। "भक्त कवि तुलसीदास ने भी नारी को समाज में सम्मानित पदपर प्रतिष्ठित किया। उनकी आराध्य जगमाता सीता का आदर्श चरित्र इसका प्रमाण है। साथही एक नारी की ही प्रेरणा स्वरूप तुलसी व्दारा "रामचरित-मानस" का लिखा जाना भी नारी महता का प्रतिपादक है।[3]

नारी मूलतः पुरूष की शिक्षिका है, तब भी, जब कि वह बच्चा होता है और तब भी जब वह वयस्क हो जाता है। नारी ही प्रेरणा की स्त्रोतस्विनी है। कष्ट के दुर्निवार क्षणों में नारी के स्नेहिल आंचल की छांह में ही पुरूष त्राण पाता है। स्त्री के बिना संसार एक अंधेरा कूप-सा है। स्त्री ही अलंकारों में सर्वोत्तम अलंकार है। इसके बिना कविता भी रसीली नहीं होती। यह मधुरता की एक मृदुल स्त्रोतस्विनी है। सौन्दर्य की एक अपूर्व खान है।

नारी का किसीभी देश के साहित्य-सृजन में बहुत बड़ा हाथ होता है। साहित्य और नारीका संबंध शाश्वत है। साहित्य समाज से अलग रहकर जी नहीं सकता। परिस्थितियों से

विलग होकर पनप नहीं सकता और युग धर्म से बहुत दूर आकाश में उड़ाने भर कर सहजानुभूतिगम्य एवं ग्राहय नहीं हो सकता। नारी उस समाज का अर्धांग है। साहित्य को नारी से दूरस्थ नहीं रखा जा सकता। भारतीय साहित्य में आदिकाल सेही नारी सम्माननीया एवं साहित्य सृजन के केन्द्रस्थ रही है।

वैदिक काल नारी को प्रतिष्ठा का सर्वोच्च काल था। वैदिक युगसेही भारतीयों ने नारी को देवी मानकर उसके प्रति श्रध्दा व्यक्त की है। नारी को देवी के रूप में कल्पना के कारण ही आर्योंनें अनेक देवियों की प्रतिष्ठा की।

""प्रकृति के रहस्यमय और रमणीय व्यापारों को, जैसे उषा- -हृदय की भावनाओं और गुणों को, धृति-जीवन की सहायता परिस्थितीयों को, लक्ष्मी- उन्होंने देवो के रूप में ग्रहण किया और अपनी समृध्दि के लिये उन की अर्चना का विधान किया।"[3]

नारी को इस महान प्रतिष्ठा के कारण ही प्राचीन काल में अलौकिक गुणों से सम्पन्न नारी को देवी का पद प्रदान किया जाता था। उसकी पूजा की जाती थी। अलौकिक रूप सौन्दर्य, अपरिमित ज्ञान तथा असीम शक्ति सम्पन्न नारी को देवी का अवतार मानकर सरल -हृदय भारतीयों ने मानव संस्कृति के आदि युग में नारी के प्रति अपनी श्रध्दा का परिचय दिया है। सीता, राधा, पार्वती, एवं सावित्री जैसे पौराणिक चरित्र इसके प्रमाण है।

१] नारी का देवीरूप ::

हिन्दी कथा-साहित्य में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का श्रेय जैनेन्द्रकुमारजी को प्राप्त होता है। प्रेमचन्द्र के बाद वे ऐसे कलाकार हैं, जिन्हें नयी दिशा का प्रवर्तक कहा जा सकता है। उन्होंने मानवीय मन की मूल प्रवृत्तियों, मनोभावों और संवेगों का सूक्ष्म विश्लेषण अपनी कहानियों में किया है। उन्होंने व्यक्ति-व्यवहार का अध्ययन, सामाजिक दशा और मानवीय अन्त:क्रियाओं के सम्बन्ध में किया है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियों में पात्रों की कम संख्या लेकर, कथानक तथा पात्रों के मन की गहरायी तक पहुँचने का सफल प्रयास किया है। अपनी कहानियों में अधिक से अधिक नारी पात्रों की व्यथाओं को उभारने की सफल प्रयास किया है। इसी कारण नारी के रूप भी अधिक स्पष्ट होते हैं।

"देवी देवता" कहानी में लेखकने नारी को देवी तथा देवता का स्थान दिया है। "नारद का अर्ध्य" , "उर्ध्वबाहू", "भाद्रबाहू" आदि कहानियों की रचना पौराणिक है लेकिन इन कहानियों में भी लेखकने नारी को उँचा स्थान दिया है। इन कहानियों में देवी अप्सराएँ, नृत्यांगना, पार्वती आदि देवी, देवताओं के रूप मे नारी मिलती है। प्रतिकात्मक तो है लेकिन फिर भी पृथ्वीपर रहनेवाले लोगों के प्रति उनके मन में कल्याण की भावना व्यक्त होती है।

इन कहानियों में व्यक्ति का नाश लोभ से और कल्याण संतोष से ही हो सकता है। इस बात की ओर ध्यान दिया गया है।

भारतीय जीवनकी विश्रृंखलता और प्रगति के कारण मध्य युग तक आते-आते स्त्री की अवस्था अवर्णनीय हो गई। उस के व्यक्तित्व पर अनेक प्रकार के उचित-अनुचित प्रतिबन्ध लगाये गये। अब वह श्रध्दा और पूजा की वस्तु नहीं, अपितु, दासी, भोग विलास की वस्तुमात्र रह गई। किन्तु फिर भी नारी के प्रति श्रध्दा समाप्त नहीं हुई और अब भी असाधारण प्रतिभासे मण्डित नारी सहज ही देवी की प्रतिष्ठा पा लेती थी। नारी के सम्पूर्ण दोषों का मूल सम्भवत: उसके यौन-सम्बधों को माना जाता है। इसलिये असाधारण कन्या को देवी के समान मानने का संस्कार हमारे समाज में आज भी विद्यमान है और अभी भी विशेष पर्वों एवं धार्मिक कृत्यों में उसकी पूजा की जाती है।

आधुनिक युग में संस्कार और यथार्थ की गहराई सम्भवत: दूर हो गई है। अब नारी को देवी न मानकर मानवीय माना जाने लगा है और मानवीय के रूप में उसकी सामाजिक स्थिती को परिवर्तित करने, उसे पुरुष का समकक्षी बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है।

२] <u>नारी का मातारूप</u> :

नारी के विभिन्न रूपों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मातृत्व

है। वेदों में माता को पृथ्वी स्वरूप कहा गया है। पृथ्वी के समान ही वह सन्तान-धारण करती है उसका पालण पोषण करती है और आजीवन उसके सुख की कामना करती है। ""स्त्री के विकास की चरम उसके मातृत्व में ही हो सकती है।[39]

नारी जीवन की सफलता मातृत्व में ही चरितार्थ होती है - माँ का पृथ्वीरूप पितासे बहुत बड़ा माना है। माता के स्वभाव में एक ओर धैर्य, त्याग,ममता, स्नेह का परम उत्कर्ष है, तो दूसरी ओर उसके पुत्रावती होने को भी अनिवार्य माना है।

जैनेन्द्र भी मातृत्व में ही नारी की सार्थकता मानते है। ""स्त्री स्वातंत्र्य और कुछ नहीं मातृत्व से बचने की चाह है और अगर उसमें मातृत्व का फल नहीं है, तो वह निष्फल है अनर्थक है। स्त्री की सार्थकता मातृत्व है।[40]

माता अपनी वात्सल्य-भावना से ही प्रेरित होकर सन्तान की प्रगति और उन्नतिके उपया खोजती है। माँ अपनी सन्तान को प्रारम्भ से ही इस प्रकार की शिक्षा देती है कि वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करे। यदि सन्तान की भूल से, चारित्रिक त्रुटि से अथवा परिस्थितियों के योग से सन्तान को कभी विपत्ति झेलनी पड़ती है तो चाहे शेष संसार उससे रूठ जाय, परन्तु माँ आवश्य ही उसे शरण एवं संरक्षण देती है, माँ के इस स्वभाव का सफल चित्र जैनेन्द्रजीकी कहानियोंमें दृष्टिगत होता है।

नारी के मातृत्व का श्रेष्ठतम रूप वह है जब वह कर्तव्य के

समक्ष अपनी वात्सल्य भावना को तिलांजली दे देती है। नारी के इस रूप का सफल चित्र जैनेन्द्रजी के अनेक कहानियों में होता है।

"फाँसी" कहानी में शामशेर को माँ है, लेकिन वह उसकी सगी माँ नहीं है। समशेर को उसने अपने बेटे की तरह पाला है। इस दुनिया में समशेर का उस माँ के सिवा और कोई नहीं है।

शामशेर और उसको माँ को पिताने छोड दिया है। माँ अपना बालक शामशेर को लेकर रहती है -""लेकिन जब एक-समय तीन रोज तक दोनों को कुछ खाने न मिला तों माँ ने सोचा माँ की गोद से तो बेटा शायद परमात्मा की गोद में ही भला रहे। और वह जी कडा करके जंगल में सोते मोहन को अकेला छोड कर चल दी। उसके जगने पर इस एक माँ ने ही उसे रोता पाया था और आश्रय दिया था।"[1]

इस कहानी में लेखकने नारी के -हृदय के अलग-अलग रूपो को स्पष्ट किया है। शामशेर की सच्ची माँ होकर भी वह अपने बालक को छोड देती है तो दुसरी माँ, जिसने पाल पोसकर बढा किया था, वह अपनी जान को दाँव पर लगाकर शमशेर को बचाती है।

"गदर के बाद" इस कहानी में अंग्रेज तथा अंदोलन कारीयों के मतभेद में अफसर अपनी जान बचाकर भागता है वह अपनी पत्नी के या बच्चें के बारे में नहीं सोचता। युवती अंग्रेजी होने के कारण आंदोलन कारी उसे छेडते हैं उसके बच्चे को उसके सामने खत्म कर देते है।

लेकिन कोई रोकनेवाला होता ? इसी बात का वह बदला लेना चाहती है। और लेके रहती है।

"अनन्तर" कहानी में पति की मृत्यू होने पर भी बच्चों की माँ घबराती नहीं है। बच्चों का पालन पोषण करना एक समस्या बन जाती है , फिरभी वह अपने बच्चों का हौसला बढाने के लिए कहती है "आ बेटे, यहाँ आ। बाप नहीं पर माँ तो है। यहाँ आ बेटे।"[2]

"इनाम " कहानी में माँ अपने बच्चे से ठीक व्यवहार नही करती दुराचारी पती के अत्याचार से वह पीड़ित है। जीवन के प्रति पलायनवादी प्रवृति से ग्रस्त रहती है।

"पाजेब" कहानी में बालक की माँ बालक को समझाने की कोशिश नही करती। इस कारण बालक के माता-पिता होते हुए भी बच्चे के लिए व्यथा और तनाव का कारण बनते है।

"आत्मशिक्षण" कहानी में बच्चे की माँ अपने बच्चे को समझ नही लेती, उसे थोडासा भी स्नेह नहीं देती। इस कहानी में लेखकने बाल्याकालीन मनोवृत्तियों का लेखक ने स्वच्छन्दतासे चित्रण किया है।

"फोटोग्राफर" कहानी में लेखकने एक ऐसी माँ का दुःख स्पष्ट किया है। कि वह पुरी तरह बेसहारा है। उस के पुत्र का नाम शाम है। श्याम की माँ जो जीना नहीं चाहती है। क्योंकि

उसके पुत्र की मृत्यू हुई है, और पती कहीं खो गया है। इस दु:ख के कारण वह आत्महत्या कर लेती है।

"किसका रूपया" कहानी में रमेश की माँ अपने बच्चे से बढ़कर पैसों की ओर ध्यान देती है।

इस कहानी में जिस लडकी का रूपया गिरा है वह बहुत डर गई है और उसकी जरूरतें भी उसी प्रकार की होंगी वह धाडी-धाडी कहती है "हाय रे आम्मा क्या कहेगी ? आम्मा मुझे बहुत मारेंगी।" लडकी अपने माँ से और मार से डरती है। इसमे यह स्पष्ट होता है कि शायद माँ अपने बच्चों को योग्य शिक्षा देती होंगी।

"चोर" कहानी में साक्षी प्रद्युम्न की माँ है जो अपने बच्चे की कुतूहल भावना को दबाना चाहती है। जो ऐसा नही होना चाहिए।

"तमाशा" कहानी में सुनयना का बच्चा न होते हुए भी बच्चा होने का अभिनय करती है। अब उसके घर में बच्चा आनेवाला नहीं है यह बात उसे मालूम है लेकिन गुडीयाँ के माध्यमसे वह अपना प्रेम व्यक्त करना चाहती है।

"दिल्लीमें" कहानी में लेखकने मातृत्व का एक अलग रूप व्यक्त किया है। प्रस्तुत कहानी में रधीया अपना बच्चा खो देती है , वह बच्चा प्रमोद लेकर करूणा के पास देता है। करूणा अपना

बच्चा न होते हुए भी उसे बच्चे को स्नेह तथा प्यार देती है। लेकिन रधिया का बच्चा होने के कारण वह किसी भी बहाने अपने बच्चे तक जाकर पहुँचती है, और अंत में बच्चे को लेकर भाग जाती है। यह मातृत्व का सच्चा रूप हमें मिलता है।

"जनता में" इस कहानी में मारवाडी की कुलवधू रेल से सफर कर रही है। उसके पास छोटा बच्चा भी है। रेल में अनेक मुसाफीर सफर कर रहे हैं और उसके बच्चे को भी खिला रहेहै। इसमें वह बहुत खुश है। उसके मन में किसी भी प्रकार का व्देष नहीं है।

"दो चिडियाँ" कहानी में लेखकने चिड़िया भोले निरीह एवं साधनहीन गरीब नारी का प्रतीक है। चिडियाँ अपनी बच्ची को सम्भालना चाहती है उसकी परवरीश करना चाहती है लेकिन बच्ची अपने माँ को छोडकर अपने प्रेमी के पास वापस आती है। इस कहानी में लेखकने यह बताया है कि माँ अपने बच्चों को सही रास्ते पर चलने की राह बताती है।

"पढ़ाई" कहानी में माँ के अन्तर्व्दन्न्द का मार्मिक चित्रण है जो पढ़ाई के लिए अपनी बेटी को रोती हुई नही देख सकती और सामाजिक मान को के भयसे पढ़ना भी आवश्यक समझती है।

"राजपथिक" प्रस्तुत कहानी में ऐसी माँ है जो अपने लाडले का खयाल रखती है, और राजकुमार, राजकुमारी, पन्नी का

महल आदि कहानियाँ सुनाकर उसे सुलाती है।

"अपना पराया" यह एक फौजी की कहानी है जो आपने बच्चे और पत्नी को छोड जाता है लेकिन माँ अपने बच्चे को पाल पोस कर बढा करती है। अचानक फौजी की मुलाकात हो जाती है।

"रामू की दादी" कहानी में माँ अपने बच्चे को दादी के भरोसे छोड विलायत गयी है। जबसे बच्चे का पालन-पोषण दादीही करती है। जैनेन्द्रने प्रस्तुत कहानी में यह स्पष्ट किया है कि कुछ कुछ माँ ऐसी भी होती है कि वह अपने स्वार्थ के लिए बच्चे का त्याग करना पडे तो भी वह रुकती नहीं है।

"एक दिन" कहानी में लेखकने एक ऐसे माँ को प्रस्तुत किया जो अपने बीमारी को महत्त्व न देते हुए घर संसार के लिए जो चीजें लगती हैं वह लाने के लिए कहती है उसे अपने स्वास्थ का खयाल नहीं है।

"चिडिया की बच्ची" कहानी में माँ और बच्ची का अत्यंत सजीव और सुंदर वर्णन किया है।

"गुरु कात्यायन" कहानी में नारी को पार्वती के रूप में प्रस्तुत किया है जो सारे दुनियाँ की माँ है। इसी प्रकार "नारद का अर्ध्य" कहानी में भी जो माता है वह सभी मानव जाती की चिंता करती रहती है।

"लाल सरोवर" कहानी में मंगलदास को माँ रूखी-सुखी खाकर दिन गुजारती है। लेकिन गाँव वालोने कहा "तुम्हारे बेटे को इस वक्त खूब मुफ्त की दौलत मिल रही है। तुम्हारे तो वारे-न्यारे है" माँ समझाती है लोग उनके गरोबी की हँसी उड़ा रहे है। माँ बहुत भोली है इस संसार के टेढे रास्तों को वह समझ नहीं पा रही है।

"उपलब्धि" कहानी में श्रीवर को माँ बुढी हो गयी है, और इसी समय श्रीवर के पिता अपना परिवार छोडकर शान्ति पाने के लिए जाना चाहते हैं। माँ तो माँ होती है वह अपने बच्चों के साथ घर का खयाल करती है" और कहती है "देखती हूँ कि तुम होकर भी नहीं हो, क्या जानती थी कि बुढापे में यह दिन देखुगी ?"

"कामनापूर्ति" कहानी में लेखकने यह बताया है कि सिर्फ धान रहकर कोई लाभ नहीं होता तो मातृत्व भी होना चाहिए। किसी विवाहित नारी को अगर बच्चा न हो तो वह कितनी हैरान होती है इसकी झाँकी प्रस्तुत कहानी में हमें मिलती है। "कालधर्म" कहानी में लेखकने यह बताया है कि पती राज्य छोडकर चले जाने के बाद राजमाता होने के नाते राज्य कारोबार संभालती है। और राजमाता होने का अधिकार जतलाती है।

"अकेला" कहानी में पति अपने बच्चों को छोडकर चला जाता है लेकिन माँ कर्तव्य निभाते हुए पुत्रियों का विवाह कर देती है, अपना घोंसला बनाएँ रहती है। २० वर्ष के बाद पति वापस आता है तो वह हिचकियाती है। "विस्मृति" कहानी में बहू का

सासमाँ को पिडा देना माँ के खिलाफ षाढयंत्रा रचना आदि बातों की ओर ध्यान दिया गया हैं। "ब्याह" कहानो में अपने परिवार को समझाने वालो तथा सभी को सम्भालनेवाली नारी है। साथ-साथ पति परायणाता है। "भाभी" कहानी में लेखाकेने नारो के अनेक रूपों को उद्धृत किया है, उसमें से एक माँता का रूप है जो इस दुनियामें उसके बेटे के सिवा और कोई नहीं है। हर समय अपने बेटे का हित ही सोचती है, तो इसके विरोधा में जैनेन्द्र की "नादीरा" कहानी में "नादीरा" नामक एक युवती है जिसके लिए उसकी सौतेली माँ अहित चाहती है। "धा्रुव यात्रा" कहानी में उर्मिला एक बच्चे की माँ है जो अपने पति को प्रगतीपर चलने की प्रेरणा देती है और बच्चे की माँ होने का गर्व करती है। उर्मिला विवाहित नहीं है वह कुमारी माता है, फिर भी वह किसीसे नहीं डरती है। उसमें हिम्मत है। "अन्धोका भेद" कहानीमें जैनेन्द्रजीने एक अलग ढाढस करनेवालो नारी को प्रस्तुत किया है। अपने बच्चों का, पति का पालन पोषण करने के लिए उसे ढाढस करना पडता हैं। अपने पति को अपने हाथों से आँखो फोडकर वह बच्चों को पालने के लिए वश्या बन जाती है। लेकिन यह पाप अपने पति को न समझे इसलिए वह उसको आँखो फोड देती है। और मिलनेवाले पैसों से अपने पतिका तथा बच्चों का पालन-पोषाण करती है।

"मित्रा विद्याधार" कहानी में अपने पुत्रा के सिरहाने बैठकर रोनेवाली माँ का चित्रा उद्धृत किया है। "अतिथ्य" कहानी में लेखाकने अमीर और गरोब का चित्रा स्पष्ट किया। माँ की बिमारो से बचाने के लिए नायक को गाँव-गाँव घुमना पडता है। तब कहीं उसे राहत मिलती है। "क:पन्था" कहानो में एक बुढीया माँ है जो

अपने बेटे से बहुत प्यार करती है। "चोरी"[४७] कहानी में साहुकार सब छिन लेता है। लक्खू बेघर हो जाता है, वह अपना घर छोडकर दुसरी जगह जाते है, पत्नी, बच्चे और साथ में माँ भी है, जिसके हाथ में एक लकडी का बक्सा है, जिसमें जवाहिरात नहीं तो जिन्दगी की यादें बंद है। "हत्या"[४८] कहानी में जो नायिका है वह हर समय नायक को एक माँ की तरह उपदेश करते रहती है। इसी कारण लेखक नायक कहता है कि वह मेरे माँ के समान लगती है। "सोद्देश्य"[४९] कहानी में यह स्पष्ट किया है कि अगर जवान लडकी, जवान लडके के साथ बांते बधारने लगे तो उन्हे डाटना चाहिए। रोकना चाहिए। इस कहानी में वीणा कविता लिखती है और किशोर के साथ बाते करती है यह बात माँ को पसंद नही है। "त्रिवेनी"[५०] कहानी की नायिका एक कुण्ठाग्रस्त माँ होने के कारण वह अपने बच्चे के प्रति थोडासा भी प्रेम नहीं देती। "क्या हो"[५१] कहानी में सुषमा के पतिको फाँसी होनेवालो है। सुषमा विधवा होनेवाली है। वह चुपचाप है कुछ नहीं बोलती ऐसे समय भी बेटे को माँ अपने सिनेपर पत्थर रखकर बहु को सहारा देने का सोचती है, एक दुसरे को धीरज देती है। "चालीस रूपये"[५२] नामक कहानी में गेंदो नामक स्त्री है जो एक बच्चे की माँ भी है, हालात के कारण बच्चे को गोद में लिए पैसे माँगते फिरती है। "मानवरक्षा"[५३] कहानी में मंदा नामक २७ वर्ष की एक युवती है जो शादी नहीं करना चाहती है लेकिन यह बात उसके माँ को उच्छी नहीं लगती। मंदा चाहती है की वह माँ को जिन्दगी भर कमाकर अपने पास रखे ताकी बुढापे में माँ बे सहारा ना हो जाए। परंतु माँ इस बात को माननेके लिए तैय्यार नहीं है। वह अपने बेटी के जिन्दगी के बारे में सोंचती है। "वह सुषी"[५४] कहानी में कहानी का नायक चार विवाह करता है लेकिन उनके बारे में कभीभी

सोचता नहीं। पहले जिससे विवाह हुआ बच्चे भी हो गये तो उसे अलग कर देता है। फिर अकेला पन सताने लगा तो दुसरी स्त्री से विवाह करता है उसे भी बच्चे हो गये तो उस बच्चों के माँ को भी छोड देता है। नायक जैसा फुलोंपर बैठने वाला भौरा हो जैसे शारद चुसता है और फूल को छोड देता है। लेकिन इस कहानी में नायकने अगर छोड भी दिया तो माता अपने बच्चों को छोडती नहीं वह चिपकाये रहती है। बच्चों का भविष्य उज्वल करनेका सोचती है। पति के छोडनेपर वह डरती नहीं।

"विराग" प्रस्तुत कहानी लेखक ने यह बात स्पष्ट की है की कोई भी माँ अपने बच्चे को ठुकराती नहीं लाख कोशिश करके बच्चे को पालने की कोशिश करती है। बाप बच्चे को धान देने से हिकिचाता है। लेकिन माँ पुरी तरहसे सहाय्यकर रही है।

"माया मामी" कहानी में मामी के दो तीन बच्चे हैं उसे बहुत परेशान करते है। बडे लडके का विवाह करने के लिए वह परेशान है। "प्रण और परिणाम" कहानी में माँ के आदेशोंका पालन किया जाता है यह बताया है। विवाह के बंधन में बंधने से पहले स्वावलंबी होना अत्यंत महत्वपूर्ण बात है। यही बात माँ अपने बच्चों को बताती है। "बीमारी" कहानी मैं एक विवाहित लडकी है। उसकी माँ उसे पतिके घर जाने से मना करती है। पति के घर के लोग अच्छे है। दामाद भी अच्छा है। लेकिन माँ का उन लोगोंपर विश्वास नहीं है। बार-बार अपने पति से वह शिकायत करती है। क्या करे ? आखिर माँ का हृदय है ना ? "विचार शक्ति" कहानी में लेखक ने यह बताया है कि स्त्रियाँ श्रध्दावान होती है। साधू-

बैरागीयों को तो वह अधिक मानती है। इस कहानीमें भी आचार्य जी के दर्शन करने अनेक महिलाएँ माताएँ आयी है और कृतज्ञ भाव से जाती है।

"दो सहेलियाँ" एक अलग प्रकार की कहानी है जिसमें अधेडउम्रकी दो महिलाएँ है। बच्चे, बहु सब घरमें आगयें है लेकिन उन के पतिकी रूचि अब भी उनमें है। इन दोने के पति बुढे हो चुके है लेकिन एक रात भी उनसे अलग रहना नहीं चाहते।

"महामहिम" कहानी में उषा नामक एक परिचारिका है। उसकी माँ बिमार है लेकिन दवा नहीं पिती। इसी बात से उषा पीडित है। माँ की तबियत धीरे-धीरे बघिड़ रही है। "निश्शेष" कहानी में शारदा को पति छोड देता है। वह अपने बच्चों के साथ पंधरह बीस वर्ष मेहनत मजदूरी कर के गुजारती है। बच्चों को बडा करती है। पंधर वर्ष के बाद बच्चों का बाप उसकी माँ को साथ ले जाना चाहता है क्यो कि शारदा अब नोकरी कर रही है। शारदा अपने पति का मार खा लेती है लेकिन जाने के लिए इन्कार कर देती है।

"यथावत" कहानी में मनोरमा अपने बच्चे को पढ़ाना चहाती है। लेकिन स्कूल का खर्च उससे जम नही पा रहा है। एक दिन वह डी.एम. साहब के पास जाती है। डी.एम. साहब उसे पहचानने से इन्कार करते है तब वह साथ में लाये डी.एम.के पत्र और अंगिया बता देती है। जब मनोरमा जवान थी तब डी.एम. साहबने मनोरमा से प्यार किया था उसी बात की याद जताकर

वह अपने पुत्र के स्कूल का खर्चा चुकाती है और डी.एम.साहब का लडका उनको वापस लौटाती है। "विच्छेद" कहानी में सविता इस कहानी की नायिका है। दो बच्चोंकी माता है। कन्या का विवाह भी हो चुका है। वह अपने पति के पास रहना नहीं चाहती है क्योंकि वह कहती है "पत्नी के धर्म में पतिका विचार नहीं हैं, धर्म का ही विचार है सविता का पति उसकी ओर ध्यान नही देताले लेकिन सविता अपने बच्चों को नही छोडती उन्हींको लेकर वह अपने पिता के पास आती है। "मुक्तप्रयोग" कहानी में शेइलेन एक आवारा आदमी है। उसका विवाह हो चुका है। एक लडका भी है। शेइलेन अपने पत्नी की ओर ध्यान नहीं देता, सिगरेट, शराब में धून रहता है। यह सभी बांते उसके बच्चे को माँ नहीं सहती अपने बच्चे को साथ लिए वह मैके चली आती है। "छ : पत्र दो राहे" कहानी में बिमला शादीशुदा है। बिमला को बच्चे भी है फिर भी पुराने प्रियकर के साथ संबंध बढ़ाना चाहती है। लेकिन प्रियकर संबंध बढ़ाना नहीं चाहता वह शिकायत करता है। बिमला को यह बात पसंद नहीं है। "उलट फेर" कहानी में लेखक ने एक बेसहारा माँ को प्रस्तुत किया है। प्रमीला के दो बच्चे है उसके पति का देहांत हो चुका है। फिर भी वह नौकरी करके अपने बच्चोंका पालन-पोषण करना चाहती है। पति जब थे तब उनके मित्र माथूर साहब घर आया करते थे। लेकिन पडदे के अन्दर से ही माथूर साहब को देखा था और माथूर साहब ने प्रमीला को कभी नहीं देखा था। इन्टरव्हयु के बाद प्रमीला को लाइब्रेरियन के पद पर लियाजाता है लेकिन प्रमीला पहचान नहीं बताती है। दो ढाईसौ रूपयेमें अपना और बच्चों का पालन-पोषण करती है।

इसी प्रकार जैनेन्द्रकुमारजी की कहानियों में व्यक्त होनेवाली माँ स्वयं कष्ट सहती है लेकिन अपने बच्चों के प्रति मन में स्नेह रखती है। हालात के कारणवंश वह बेसहारा हो जाती है। न पति का सहारा होता है न मैके का इसी हालात में भी वह डगमगाती नहीं अपने बच्चों को पाल-पोसे कर बढानेकी हिम्मत उसमें है। माँ की ममता बच्चों को छोडने नही देती। हर एक कहानी में चाहे पति छोडकर कहीं पर भी चला जाय इसी बातसे वह मायूस नहीं होती। बच्चों के भविष्य के लिए अनेक समस्याओं का सामना करती है। उसमें एक अटूट हिम्मत है जो बच्चों को अपनेसे दूर नहीं करती है। कभीभी बच्चों के हितके बारे में ही सोचती है। लडकी का ब्याह भी करके उसे पति के घर बिदा करती है। जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों में त्याग करनेवाली समस्याओंका सामना करनेवाली,बच्चों का हित जाननेवाली माता ही उद्घृत होती है।

२] नारी का पत्नीरूप :

नारी के पारिवारिक सम्बन्धो में पति-पत्नी का सम्बन्ध सबसे महत्त्वपूर्ण है। "मानव सभ्यता के आदि कालसे पत्नी के धर्म और मर्यादा का महत्व स्वीकार किया गया है। पतिव्रत पत्नी का परम-धर्म माना गया है। तन-मन वचन से पतिपरायणता नारी का आदर्श रूप है। वह पति की शक्ति है। "अपनी योग्यता कुशलता, और सेवा से दाम्पत्य जीवन को निरन्तर सुचारू रूप से चलाना पत्नी का धर्म है। पति चाहे अपने कर्तव्य से विमुख हो जाय, चला जाय, पर पत्नी अपने कर्तव्य से कभी विमुख नहीं होती, यहीं उसका सनातन आदर्श है।[8] यहीं उसकी बुनियाद है।

भारतीय समाज में समय-समय पर अनेक परिवर्तन होते रहे हैं। इसी प्रकार नारी की स्थिति में भी परिवर्तन होते रहे हैं। वैदिक युग में नारी को प्रतिष्ठित पद प्राप्त था तो मध्य-युग में व्यभिचार की जननी कहा जाने लगा। पर पत्नी धर्म के मूल रूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। चाहे पति से उसे प्रेम मिले या न मिले फिरभी परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन करके पत्नी, सेविका, दासी, रूपों को धारण करके वह अपने धर्म से कभी विचलित नहीं हुई। कठीन से कठीन परिस्थिति उसके सामने आकर खड़ी हो, तो भी उसके प्रेम से वह हल हो गई हैं। नारी ने एक बार जिसे चुन लिया है, अपने मन में बसा लिया है आजीवन उसी के प्रति समर्पित रहती है। विषम से विषम परिस्थितियों में भी वह अपने प्रेम से सामना करती है। अपने अनन्य प्रेम और निष्ठा के कारण ही पत्नी सदा अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को अपने मन में स्थान नहीं देती। हालात के कारण यदि उसका तन पराजित हो भी जाय तो भी उसका मन सदैव अपने पतिकाही स्मरण करता है।

नारी अपने पतिको सुख-दुख, आशा-निराशा, आचार-विचार और महत्वाकांक्षाओं को अपना कर ही अर्धांगिनी बनती है। विपत्ति में धीरज बंधाती है और परिश्रम में उसका पूरा-पूरा खयाल रखती है।

नारी में कुदरती परिस्थितियों के अनुकूल आत्मपरिवर्तन की एक विलक्षण ताकद पायी जाती है। परिस्थितियों के अनुसार अपने बाह्य जगत को जान लेने की जितनी सहज प्रवृत्ति नारी में है, अपने स्वभावगत गुण न छोडने की अन्तरिक प्रेरणा उसमें कम नहीं है।

इसी कारण भारतीय नारी पुरुष से अधिक सतर्कता के साथ अपनी विशेषताओंकी रक्षा कर सकी है। पुरुष के सम्मान अपनी व्यथा को भूलने के लिए किसी का सहारा नहीं लेती न किसी से सुखों के क्षण की भीख माँगती क्यों कि दु:ख को वह जीवन की परीक्षा का क्षण मानती है और अपने अटल विश्वासपर डीगी रहती है।

कभी विषम परिस्थितियों के कारण अथवा स्वभावके कारण पति किसी ऐसे मार्ग का अनुसरण करने लगता है जिससे उसकी प्रतिष्ठा, मर्यादा, और सुख के नष्ट होने की सम्भावना है तो पत्नी अपने जानपर खेलकर पति को इस मार्ग से पराजित करने का प्रयत्न करती है। पति-पत्नी का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ट एवं अन्तरंग होता है। वे एक दूसरे को कभी दु:खी नहीं देखना चाहते। सुख हो या दु:ख हो आपस में बाँट लेते हैं। और अगर सहा नही गया तो अनुचित प्रकार भी कर बैठते हैं। पत्नी-पति की अर्धांगिनी होती है। वह उसके सुख-दुखों की समान भागिदारी होती है।

पति के विचारों की मन:स्थिति को समझना और स्वयं को उसके अनुरूप ढालना उसका कर्तव्य है। हर हालात में पति के साथ परछाई की तरह रहकर वह अपना कर्तव्य निभाती है।

जैनेन्द्र की कहानियों में भी ऐसे अनेक नारी-पात्र उपस्थित होते हैं जो अपने परिवार का, पतिका खयाल रखती है। बच्चों की पढाई की ओर ध्यान रखती है। अपने परिवार को सम्भालने की कोशिश करती है।

जैनेन्द्रकुमारकी कहानियों के नारी पात्रों की विशेषता यह है कि उनकी नायिकाएं मध्यवर्गीय समाज और मान्यताओं में पली साधारण घरेलू, कम-पढी-लिखी नारियाँ है। गृहस्थी के दायित्वों एवं पति तथा परिवार की नैतिक अवस्थाओं को भी स्वीकार करनेवाली है। परिस्थितिके साथ समझौता कर लेती है लेकिन मनही मन छटपटाते रहती है। जैनेन्द्रकुमारजी के नारी-पात्रों की सबसे बडी विशिष्टता यह है कि जीवन में आशा-आकांक्षा पूरी न होने के कारणअपने पति के अतिरिक्त पर पुरुष की ओर आकर्षित होती है। बच्चों का बन्धन, पति का भय और पारिवारिक परिवेश उन्हें जरा भी त्रास्त नहीं करता। वे अपने मनोनुकूल निश्चय करके कार्य करनेवाली नारियाँ है। पति के अविचल तथा एक निष्ट स्नेह की प्राप्ति का सौभाग्य हर नारी को कहाँ प्राप्त होता है ? ऐसी ही कुछ नारियों के जीवन की कहानियाँ जैनेन्द्रकुमारजीने हमारे सामने रखी है।

" फाँसी " कहानी में समशेर का पिता हालात के कारण अपनी पत्नी को छोड देता है। भूक की आग मिटाने के लिए उसे और अपने बच्चे को दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती है। "गदर के बाद" कहानी में कर्नल अपनी जान बचाकर भाग जाता है। वह अपनी पत्नी के बारे में सोचता नहीं। फिर भी कर्नल की पत्नी अपने पति तक जाकर पहूँचती है। उसे अकेले छोडकर आनेकी भी शिकायत नहीं करती है। "जनार्दन की रानी" में राजा जनार्दन राज्य छोडकर विरक्ति पथपर चल पडते है। पत्नी उनकी याद में जीवन बीताती है। राज कारोबार देखने वाले शासक उसे ठगाते हैं। रानी को कोई भी महत्त्व नहीं देता। "जय-सन्धि" कहानी में यशोविजय

की पत्नी बसन्ततिलका अपने पति को बचाने के लिए अनेक प्रयत्न करती है। होनेवाले महाभयंकर संहार को रोकने की कोशिश करती है। और उसमें कामयाब होती है। अपने पति को बचाने के लिए सबकुछ न्यौछावर करने के लिए तैय्यार हो जानेवाली अनेक नायिकाएँ में हमें मिलती है।

"रानी महामाया" कहानी में राजा वैजयन्त अपनी पत्नी को यौवनावस्था में ही छोडकर चला जाता है। प्रजा का बोझा उसे सम्भालना पडता है। अपने पति के यादों में वह रात-रातभर जागती रहती है और रो-रोकर अपने दर्द को हल्का कर लेती है। इसी प्रकार उसका यौवन ढल जाता है। लेकिन राजा वैजयन्त लौटकर वापस नहीं आता। "अनन्तर" कहानी में लेखकने यह स्पष्ट किया है की निकटतम सम्बन्धियों की भी मृत्यू हो जाती है, फिर भी यह जीवन की गति रूकती नहीं है। पति की मृत्यू हो जानेसे सभी और अंधियारा छा गया है। जैसे जीवन की गति रूक गई हो। "इनाम" कहानी में दुराचार पति के अत्याचार सहनेवाली पत्नी है। जिसे जीवन में थोडासाभी सुख नहीं है इसी कारण वह कुण्ठाग्रस्त बन गई है। अपने बच्चे के साथ भी वह ठीक व्यवहार नहीं करती। "पाजेब" कहानी में एक ऐसी पत्नी है जो की बच्चों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए यह उसे समझाता नहीं है। वह अपने बच्चेपर जबरन चोरी का इल्जाम लगाती है। यह "बडो के असंतुलित और असामान्य व्यवहार के फल स्वरूप अत्पन्न होने वाली बाल-कों की मानसिक यातना की कहानी है।"[20]

"आत्मशिक्षण" कहानी में रामरत्न की पत्नी दिनमणि

बालक रामचरण के स्वभाव को और उसकी अपेक्षाओं को समझाने में असमर्थ है। माता-पिता होते हुए भी बच्चे के लिए व्यथा और तनाव का कारण बनते है।

"फोटोग्राफर" कहानी में पति और पुत्र, दोनों को देने के पश्चात आत्महत्या की ओर उद्यत होती हुई नारी की विवशता के बहाने नियतिवाद पर प्रकाश डाला गया है। "किसका रुपया" कहानी में लेखकने मानसिक पीडा को रेखांकि किया है। तथा घर में रहकर पत्नी किस प्रकार परेशान होती है। इस बात को ओर भी ध्यान दिया है। "चोर" कहानी में अनेक स्त्रियों का वर्णन किया है हर एकस्त्री चोर की कल्पना अपने-अपने ढंगसे बता रही है। लेकिन सवित्री प्रद्युम्न की माँ है उसका कर्तव्य है की अपने बच्चे की समस्या का हल करना है लेकिन सावित्री भी अपने बच्चे के मन में चोर का डर अधिक उत्पन्न कर देती है।

"तमाशा" यह कहानी जैनेन्द्रकुमारजी ने अलग ढंग से प्रस्तुत की है। इस कहानी मे जो नही है वह पात्रो के माध्यमसे व्यक्त करने का सफल प्रयत्न किया है। सुनयना का पति विनोद है। उन दोनों को बच्चा नहीं है, फिरभी बाजार से गुड्डा-गुडीयाँ लाकर कर वह बच्चे की तरह उसे सँभालते है।

"दिल्ली में" कहानी में कहानी की नायिका करुणा पराए शिशुपर अपनी सारी ममता न्यौछावर कर देती है। पति के विश्वास और प्रेम का सहारा थामकर वह सामाजिक मानदंडो की परवाह किये बिना उस शिशुका पुत्राकी भाँति पालनपोषण करती है।"

"जनता में" कहानी में रेल से सफर करते समय एक डिब्बेमें एक दुसरे का परिचय हो जाता है। किशोरी मारवाडी को कुलवधू है उसके बच्चे को लेकर खिलाते है। सभी प्रवासी उस बच्चेसे प्यार करते है यह देखकर वह बहुत खुश है।

"दो चिडियाँ" कहानी प्रतिकात्मकता व्दारा नारी और पुरूष के आकर्षण तथा प्रेम को ही दर्शाया गया है। प्रिय के पास पुन: लौटने की आशा के कारण तथा उस से संयोग को इच्छा के कारण चिडिया अपनी माँ को छोडकर अपने प्रेमी के पास हो आती है। उसकी माँ भी भावानुकूल होकर अपने मृत पति के वियोग में अपने प्राणों का विसर्जन करती है।[६१]

"अपना पराया" प्रस्तुत कहानी में युध्द का विघातनकारी रूप पाठको के सामने आया है। फौजी अपना घर पत्नी, बच्चा छोडकर फौज में चला जाता है। बहुत साला बीतते है लेकिन वापस नही आता। अचानक एक दिन रेल में ही उसकी पत्नी तथा बच्चों से मुलाकत होती है। परंतु वह पहचान नहीं पाता। "रामू की दादी" कहानी में रामू की माँ अपने पति को छोडकर कहाँ गई है यहकिसी को पता नहीं है। पिता विलायत में जाकर रम रहा है।

"देवीदेवता" कहानी में नारी का स्थान उँचा बनया है। देवता का रूप दिया है। किन्तु ऐसी नारियाँ पत्नित्व का स्वीकार करने के लिए तय्यार नहीं है। "एक दिन कहानी में माँ और बेटे का वृत्तांत मिलता है। पति की मृत्यू के कारण इस दुनिया में उस नारी का इस बेटे के सिवा और कोई नहीं है।

"गुरु कात्यायन" कहानी में शिवजी और पार्वती की प्रतीकात्मक सृष्टि करके लेखकन नारी की पुरुष के प्रति अभिवृत्ति निरूपित की है।" "भद्रबाहू" कहानी में लेखकन यह बताया है की सती पत्नी की महिमा कितनी श्रेष्ठ होती है। भद्रबाहू तपस्या करके देव लोगों मेंसमस्या निमार्ण करने वाला था, उसको तपस्या भंग करने के लिए इन्द्र रति को चित लुभाने का काम उसपर सौंपते है। रति अपने पति की आज्ञा का पालन करती है। आनेवाली समस्या का निमुर्लन करती है।

जैनेन्द्र ने कुछ कहानियाँ ऐसी लिखी है। जो दिखाने में तो वे लोक कथाओं की तरह रोचक है किन्तु उन सबमें से प्रत्येक में किसी-न-किसी जीवन-सत्य की ओर संकेत है। "नारद का अर्ध्य" इस कहानी में महादेव शिवशंकर की पत्नी पार्वती स्वर्ग लोक में रहकर पृथ्वीपर रहनेवाले मनुष्य जाती का कल्याण करना चाहती है। वह लोभ से निर्माण होने वाले संहार को खत्म करना चाहती है। "लाल सरोवर " कहानी में मंगलदास के चरित्र व्दारा लेखकने यह स्पष्ट किया है कि पति और माँ के प्रति कितना भिन्न होता है। कहानी में मंगलदास बैरागी के सम्पर्क में रहकर कई हजार अशर्फिया एकत्रित करता है। लेकीन रूपये की बात माँ को नहीं बतलाता और स्त्री माँ को नही बतलाती। अपने पति के कहने के अनुसार रहती है।

"उपलब्धि" कहानी में जीवन की नि:सारता तथा मृत्युबोध के व्दारा आत्मा को परमात्मा में तिरोहित कर देने का स्वर सुनायी पड़ता है। जिनरा जनदास मोह माया से संसार से मुक्ति पाना चाहते है। लेकिन अपने पति पत्नी के बारे में कुछ नहीं सोचते परिवार की जिम्मेदारी पत्नीपर छोड़कर चले जाते है।

वह पति की आशा करना छोड देती है और लडके के आशापर जीवन बिताती है।

"कामना-पूर्ति" कहानी में जैनेन्द्रने कुछ अलगपनसा व्यक्त किया है। इस कहानी में कान्तिचरण सन्तति को अनावश्यक मानते हैं। वह नहीं चाहते कि उनकी पत्नी रूपवती सन्तान प्राप्त करे क्योंकि उनकी यह अभिवृत्ति है कि "बालक होनेपर स्त्री पति से परे हो जाती है। और कान्तिचरण का कहना उनको पत्नी मान लेती है।

"कालधर्म" कहानी में एक आदर्शवादी शासक का उदाहरण प्रस्तुत किया है। महाराज वियभद्र विजय पर विजय पाते चले गये और एक दिन पुत्रको राज्य सम्भालने के लिए कहकर सत्य की शोध में चले जाते हैं। राज्य का कारोभार चलाना रानीपर आ जाता है फिर भी वह डगमगाती नहीं स्वयं शासक होकर प्रजा के नियमानुसार राज चलाती है। वह अपने पति के कमी को थोडासा भी महसूस होने नहीं देती। "वह बेचारा" कहानी में सँपेरा और उसकी पत्नी पेट की दो वक्त की आग बुझाने के लिए रास्ते पें खेल करते हैं और दो वक्त की रोटी मिलने पर भगवान को धन्यवाद देते हैं। सँपेरे की पत्नी अपने पतिसे कभी कभी शिकायत नहीं करती और न भटकने के लिए हिचकिचाती है।

चौथे भाग की कहानियों में जैनेन्द्र ने सामाजिक सम्बन्धोपर प्रकाश डालते हुए स्त्री-पुरुष की प्रेम और विवाह सम्बन्धी समस्याओं का उद्घाटन किया है।

"जैनेन्द्रने उपन्यासों के समान इन कहानियों में भी त्रिकोण पति-पत्नी-प्रेमी की स्थिति दृष्टिगोचर होती है। इन समस्याओं के प्रति जैनेन्द्रने अपना नवीन दृष्टिकोन प्रस्तुत किया है, जो उनकी निजी धारणाओं और मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करता है।"[12]

""मास्टरजी" कहनी में पति के अत्याधिक प्रेम से ऊबी श्यामकला पहाडी नौकर के साथ भागकर पुन: पति के पास वापिस आती है। वह पतिसे अत्यधिक प्रेम नहीं प्रत्युत तिरस्कार भी चाहती है।"[13]

"घुंघरू" कहानी की नायिका उर्मिला एक विवाहीत स्त्री है जिसे उसका पति बहुत प्रेम करता है। जिसके प्रेम से वह उब गयी है। पढी-लिखी है। होटलो में रहती है, नाच करती है, पढ़ें लिखे और पैसेवाले पुरुष के साथ रहना चाहती है।

"अकेला" कहानी में पत्नी, पतिसे दूर काम-भावना से सर्वथा निर्लिप्त रहना चाहती है। पति को कर्तव्य-पथ से हटता देख वह आत्म-पीड़ा से विव्हल हो उठती है, तथा कहती है "जिस भारत माता के बन्धन तोडने आप गए थे वे नहीं टूटे हैं। उससे पहले आपको इस अभागिन की याद आ गई ? अब तक अपने दुर्भाग्य में भी मुझे वह सुख था कि मेरे पति कर्तव्य-पथ पर बलि होने गए हैं। आज क्या वह सौभाग्य भी मेरे माथे पर नही रहेगा"[14]?

"समाप्ति" कहानी में नायक और उसके मित्र के बहस को मिटाने का काम नायक की पत्नी करती है। "रेल में कहानी में लेखकने एक चरित्रहीन मनुष्य की गृहिणीका नग्न रूप प्रस्तुत किया

है जो पति के होते हुए भी अन्य व्यक्तियों के साथ घूमती रहती है। उसका न कोई पति है-और न कोई सच्चा प्रेमी। हर किसी के समक्ष वह आत्म समर्पण कर देती है। उसके चरित्र में दृढ़ता की अपेक्षा दुर्बलता का प्राधान्य है। गेस्टाल्टवादी मनो वैज्ञानिक धारणावाली कहानियों के सामान्य स्त्री पात्र या तो मध्य वर्ग के है अथवा उच्च वर्ग के है।"[45]

"ग्रामोफोन का रिकार्ड" कहानी में लेखकने आज के गतिशिल जीवन के कारण गृहिणी पर क्या गुजरती है इसका चित्रण किया है। इस कहानी की नायिका विजया सुशील है, सुंदर है, शिक्षित है। सभ्य है। लेकिन पति को पत्नी की ओर ध्यान देने के लिए समय नहीं है। वह दिन रात काम में व्यस्त रहता है। पत्नी ग्रामोफोन का रिकार्ड सुनते दिन बीता रही है।

"विस्मृति" कहानी में लेखकने नारी नारीका शोषण किस प्रकार करती है इसका चित्रण किया है। कहानी की नायिका अपने पती को बंधन में रखकर सासमाँ के खिलाप शिकायत करती है। और उसका पती माँ को पिडा देना शुरू करता है।

"परावर्तन" नामक कहानी में एक ओर जहां मालती और शीला आदर्श गृहिणी है और उनके चरित्र में स्वच्छता एवं निष्कपटता है वहां दूसरी ओर मंजुला के व्यक्तित्व में छल है, कपट है और स्वार्थ है। "ब्याह" कहानी में विवाह के विषय में नयी धारणा प्रस्तुत हुई है। "कहानी में ललिता अपनी अपार चंचलता एवं अहंण्यता के क कारण इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न कर लेती है जो उसे वहाँ से भाग जाने को बाध्यकर देती है। अपने मान-मर्यादा की चिन्ता न करके

बढ़ई के पुत्र से विवाह कर लेती है।

"एकरात" कहानी में नायिका सुदर्शना जयराज से प्रणय सम्बन्ध स्थापित तो कर लेती है पर अपनी मनोग्रंथी के खुल जाने पर वह उसे अकेला छोडकर चली जाती है।

"रत्नप्रभा" कहानी में लेखकने एक कुण्ठाग्रस्त पत्नी का रूप पनपता है। पति बुढा है। यौवना पत्नी की दमित प्रणय और कामवासना की अतिशयताका स्वर है। "ध्रुव यात्रा" कहानी में नायिका विवाहित न होकर विवाहि पत्नी जैसा रहती है। वह प्रेम की प्यासी नहीं है। पती के इच्छा आकांक्षाओं को पुरा करनेकी तीव्र इच्छा है। "बीडट्रिस" में लार्ड की बेटी बीडट्रिस की कथा है जो नर्स बनकर सम्पूर्ण मानवता से प्रेम करती है तथा पति की संशय-वृत्ति का शिकार होती है। अन्त में उसके पति में ही वह अहसास जागता है कि जिन सम्मान नीयों को वह जानता है, उनमें से वह कम सम्माननीय न थी। "मोठीखोड़ा" कहानी में विमल और ज्योत्सना के मन में एक-दूसरे के प्रति घृणा एवं तिरस्कार की भावना छोटी-छोटी बातों के कारण उत्पन्न होती रहती है, फिर भी एक दुसरे के प्रति उनका प्रेम सहज एवं स्वाभाविक है। घृणाएवं तिरस्कार के बाद उनमें काम-भावना और अधिक प्रबल होती जाती है,"बाक्स में अंधेरा था, उसे होठों तक लिये जा रहा है, "उसने कहा, यू स्वायन उत्तर मिला थैंक यु मैडम।३६

"विरोधी स्थिति उत्पन्न होने पर मानव हिंसात्मक रूप धारण करके आक्रमण की ओर प्रवृत्त होती है, ठीक इसी प्रकार

प्रकार जब व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है, तब, निरन्तर संघर्ष एवं कुण्ठा के कारण उसके अन्तर्मन में घुटन होने लगती है। ऐसी परिस्थिति के उत्पन्न होने पर व्यक्ति उससे बचना चाहता और इसके लिए वह वहां से भाग निकलने का प्रयत्न करता है अथवा आत्मघात करके जीवन से मुक्ति पा लेता है।"

जैनेन्द्र की "अन्धोका भेंद" नामक कहानी में सुरदास की पत्नी को अर्थ के अभाव में अपना घर छोडने के लिए विवस होना पडता है। उसे पापपूर्ण कृत्य करने पडते है, यहाँ तक कि वह अपने पति की आँखे भी फोड देती है। इन्ही पापपूर्ण कृत्यों के कारण वह देवी से अपनी मृत्यु की याचना करती है।

"साधु की हठ" कहानी में लेखकने धार्मिक अंधविश्वास के माध्यमसे भारतीय संस्कृति पर प्रकाश डाला है। साधु के कारण ही दरोगा अपनी पत्नी को पिटता है। "इक्के में" कहानी में टोकरियाँ बुनकर अपने परिवार का खर्च चलानेवाली पत्नीयोंको प्रस्तुत किया है, जिन के पति अपने परिवार के बारे में कभीभी नहीं सोचते।

"पानवाला" एक ऐसी कहानी है जिसमें नायक की पत्नी वेश्या बनकर अन्य नायक के साथ भागती है और पति जीवनभर सारे भारत भर उसे ढूँढता फिरता है और अपना धन उसी के लिए संचित करके रखता है।

"प्रियव्रत" कहानी में पत्नी अपने पति को जीने के लिए

शराब लाकर देती है। डॉक्टर ने शराब पीने के लिए मना किया है। दया को डॉक्टर के दवाओंपर विश्वास नहीं है। इसलिए वह शराब देकर पति को बचाना चाहती है।

"आतिथ्य", कहानी में नायक मास्टर साहब अपने बीबी बच्चों को लेकर अपने मित्र के यहाँ जाते हैं ताकि कुछ सहाय्यता हो जाये। मित्र अमीर होने के कारण मास्टरजी तथा उसके सभी परिवार का अपमान हो जाता है। प्रस्तुत कहानी दुर्बलतापर भी प्रकाश डालती है।

"कःपन्था", कहानी में गृहस्थ-धर्म का महत्त्व प्रतिपादित करते हुऐ व्यक्ति को अपने दायित्व निभाने की प्रेरणा दी गयी है। अपने कर्तव्यों से मुख मोडकर आध्यात्मिक विषयोंका चिंतन खतरे से खाली नहीं है।

"चोरी", कहानी में लक्खू उसकी पत्नी माँ और बच्चे अर्थिक विपन्नता का चित्रण सामने रखाती है। शोषक और शोषित वर्ग की एक तस्वीर सामने रखाती है। "सजा" कहानी में नायक नायिका और मिसरानी है जो अपने बच्चे के लिए पैसे चुराती है। "हत्या" कहानी में पशु प्रेम की महता उद्घाटित हुई है। इस कहानी में ओवरसीयर बूढी घोडी से इतना स्नेह करते है कि उसे परिवार का अंग समझाते है, और बदलेमें वह घोडी भी उनसे उतनाही प्रेम करती है।

इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ प्रेम और विवाह

सम्बन्धी समस्याओं से जुडी हुई है। इन कहानियोंकी की विशिष्टता पात्रों के चारित्रिक विशेषता में विहित है। लेखकने पात्रों की मनभावनाओं का चित्रण मनो वैज्ञानिक आधारपर किया है।

"राजीव और भाभी" कहानी में भाभी -देवर का संबंध स्पष्ट किया है। राजीव एक कलाकार है जिसके पडोस में एक विवाहीत नारी रहती है जिसे राजीव अपनी भाभी मानता है। स्नेह बढता है होली के रंगो की छेड छाड उसके पति को पसंद नही है। "सोद्देश्य" कहानी में युवा-युवती को एक दूसरे से मिलना ठीक नहीं होता। अपनी लडकी पर कडी नजर रखनेवाली तथा लडकी का विवाह जल्दसे जल्द हो जाये। ऐसी कोशिश करनेवाली माँ है और पत्नी भी है।

"कुछ उलझन" कहानी में प्रेम की दिव्यता त्याग में स्वीकार की गयी है, विवाह में नहीं। पति की अत्यधिक उदारता पत्नी लिलावती को प्राप्त है और वह पूर्व प्रेमी के लिये विवाहोपरान्त भी समर्पित है।

"रुकिया बुढ़िया" नारी समस्याओं पर प्रकाश डालनेवाली कहानी है। प्रेमिका के साथ भागने वाले पति की पत्नी आर्थिक विवशता से किस तरह पीड़ित होकर अपना यौवन खो बैठती है, उसी का मार्मिक चित्रण जैनेन्द्र ने इस कहानी में किया है।[27]

"दर्शन की चाह" कहानी में नायक कामेच्छा से पीडित होकर अपने दायित्व को भी भुला देता है और पत्नी संतप्त होकर

आत्महत्या का मार्ग अपना लेती है। "तो लायें" कहानी में पारिवारिक संबधोको व्यक्त किया है। नायक की पत्नी पति की सेवा तथा पति पत्नी के बारे में खयाल रखाता है। इसी कहानी में वृध्दों के समस्याओं को भी मार्मिक ढंगसे स्पष्ट किया है।

"त्रिबेनी" प्रस्तुत कहानी की नायिका आर्थिक समस्याओं से परेशान होने के कारण वह अपने बच्चे तथा पति के साथ ठिक व्यवहार नहीं करती है। हर समय वह जीवन से पलायन करने को सोचती है।

"आलोचना" कहानी के नायक को फाँसी लग जाती है उसके पीछे उसकी पत्नी और बहन है जो अब बेसहारा है।

"क्या हो" कहानी में कहानी का नायक दिनकर है, कुछ ही दिनों में उसे फाँसी लगने वाली है। सुषमा अपने पतिसे मिलने जेल चली जाती है। तब पति कहता है "मुझे फाँसी लगने के बाद अपने छोटे भाई से विवाह कर ले " सुषमा यह बात मानने के लिए तय्यार नही है। वह विष पीकर मरना चाहती है, लेकिन दुसरा विवाह नही करना चाहती है। क्योंकि उसने अपने पति को ईश्वर का अवतार माना है।

" ये पत्र" कहानी में लेखकने यह बताया है कि प्रेम अगर विवाह में परिणत हो तो वह सामान्य बन जाता है। तथा उसका विकास ठहर जाता है। प्रेम व्यक्ति को विशेष बनाता है अगर वह सामान्य रह जाये तो उच्चतर धरातल का संस्पर्श करता है। जैनेन्द्र के अनुसार प्रेम की परिणति विवाह में होना आवश्यक नहीं है।

"कहानी की कहानी" में लेखकने गांधीवाद के प्रति असिम श्रध्दा और आस्था का उद्घाटन किया है। तथा पारिवारिक जीवन में पति-पत्नी का एक दुसरे के प्रति स्नेह प्रस्तुत किया है। "स्वोकार" कहानी में नायक की पत्नी घर में न होने के कारण उसे अकेलापन महसूस होने लगता है। लेखकने इस कहानी में व्यक्ति के अन्तर्जगत में उठने वाले तूफान को अभिव्यक्ति दो है। "वह क्षण" कहानी में राजीव विवाह करने के लिए तैय्यार नहीं है। उसके पिता-माता उसे समझाने के कोशिश करते है। "सहयोग" कहानो में कहानी की नायिका शारदा है जिसका विवाह हो चुका है। फिर भी वह प्रियकर से मिलना चाहती है, अपना पत्नीत्व इस प्रकार निभाती है। "वह सुफी" इस पत्नी की कहानी है जो पतिव्दारा नये सम्बन्ध स्थापित करने के पश्चात भी विरोध नहीं करती और नही पति से किसी आश्रय और आर्थिक सहायता की अपेक्षा रखाती है।

"प्रमिला", प्रेम सम्बन्धो की उत्कृष्टता की कहानी है जहाँ प्रेयसी विवाहि होनेपर भी प्रियकर से मिलना चाहती है, लेकिन प्रियकर इसी कारण मिलना नहीं चाहता कि वैवाहिकजीवन में कोई दरार न आजाए। "विराग" कहानी में कहानी की नायिका बहुत समझदार है। वह अपने पति को समझाती है कि गृहस्थ जीवन ही श्रेष्ठ है, पति की पत्नी और बच्चों को त्यागना उचित बात नहीं है। "निराकरण" में लेखकने पति-पत्नी सम्बन्धोपर प्रकाश डालते हुए लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि दोनों की प्रसन्नता और जीवन का सुख एक दुसरे के सानिध्य में ही निहित है।

"प्रत्यावर्तन", कहानी की नायिका भागवती को उसके

पतिसे विचारों में, व्यवहारों में असमानता उत्पन्न होती है। जिस के कारण दोनों में व्दंव्द निमार्ण हो जाते है। "आवर्त", कहानी में मृत्युवाद का स्वर मुखारित हुआ है। पति की मृत्यू के बाद पत्नी बेसहारा हो जाती है। इस विषया को लेकर लेखकने प्रकाश डाला है।

"मौत और, कहानी में पत्नी पति के प्रति पूर्णता समर्पित होती है। फिर भी उसे जीवन में घुटन और पीडा सहनी पडती है। वह कम पढी-लिखी है यह उसकी कमजोरी है। "पत्नी" कहानी की नायिका सुनन्दा अपने पति का हर बात से खयाल रखाती है, वह कम पढी-लिखी है इस बात के कारण कालिन्दीचरण पति उसे नासमझ, अनपढ समझाते है और उसकी ओर ध्यान नहीं देते। "माया मामी", कहानी में नायिका के पहले दिन बहुत अच्छे गुजरते है लेकिन पति की मृत्यू बाद उसे कुछ न कुछ काम करके पेट भरना पडता है।

"प्रण और परिणाम", कहानी में नये मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में प्रेम और विवाह की समस्या का उद्घाटन करती है। इस कहानी की नायिका अपने पतिसे बच्चों का अधिक खयाल रखाती है। "वह रानी" कहानी में नायिका विवाहोपरान्त अपने पूर्व प्रेमी से किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता स्वीकार करने से इन्कार कर देती है स्वयं यातनाएँ भोगती है।

"अमिया, तुम चुप क्यों हो गई" प्रस्तुत कहानी की नायिका विवाहि होने के उपरान्त अपने विवाह पूर्व प्रियकर के साथ घुमती

फिरती है। वह किसी से डरती नहीं न समाजसे न अपने पतिसे।

"मृत्यु दण्ड" कहानी में ऐसी नारी है जो पति को खुश रखने के लिए पति के मित्र के सामने नंगी होकर नाचती है। और मार खाती है। "बिखरी कहानी", प्रस्तुत कहानी लेखकने अपने मित्र की याद में लिखी है। मित्र के कागजों में यह कहानी बिखरी पडी थी। इस कहानी में भी पति के मृत्यु बाद पत्नी को किस प्रकार यातनाएँ सहना पडती है इस का विवेचन लेखकने किया है। " अ-विज्ञान", कहानी में विवाहोपरान्त भी पूर्व सबन्धो को नायिका कायम रखना चाहती है। नायिका विवाहित होकर भी विवाहपूर्व प्रियकर को मिलने की तडप उसमें तीव्र है। इस कहानी में जैनेन्द्र की मान्यताओं की पुष्टी है।

"सबकी खबर", कहानी में तिशाना, प्रमिला, रेवती, और चम्पो आदि चार स्त्रियों के साथ इस कहानी का नायक विवाह करता है, फिर भी संतुष्ठ नहीं होता। कहानी की नायिकाएँ अपने पति से कुछ शिकायत नहीं करती, अपने बच्चों को लेकर पतिसे अलग हो जाती है। "बीमारी", कहानी में कुँवरसाहब की पत्नी अपनी लडकी को ससुराल जाने से मना करती है। वह कहती है, लडकी ससुराल जाने से ही बीमार होती है। वह अपने पतिसे कहकर दामाद और लडकी को रोकने की कोशिश करती है।

"विचार-शक्ति", कहानी नारी श्रध्दालु होती है इस बात को समुखी के रूपसे प्रस्तुत किया है।

"दो सहेलियाँ", उस स्त्री की कहानी है जो अपने पति की अत्यधिक कामुकता और परवशता से उत्पन्न ऊब और नीरसता का अनुभव करती है। "महामहिम" कहानीकी नायिका की मृत्यू हो चुकी है, उषा नामक युवती है जो स्वयं को परिचारिका समझकर काम कर रही है। "निश्शेष", कहानी की नायिका शारदा पतिके दुर्व्यवहारसे घुटन महसूस करती है। वह मारता है, पीटता है। उसीने उसे पन्द्रह साल पहले मैके भेज दिया था। शारदा अब पैसे कमाती है अपने बच्चोंको परवरीश करती है। शारदा का पति अब उसे ले जाने आया है तब वह मरने के लिए तैय्यार होती है लेकिन पतिके घर नहीं।

"यथावत", कहानी में लेखकने कुमारी माता का सवाल उठाया है। मनोरमा माँ तो बन चुकी है, लेकिन उसका विवाह अब तक नही हुआ है। अब वह स्वयं अध्यापिका है।

"विच्छेद", कहानी की नायिका सविता विवाह को बंधन न मानकर विवाह विच्छेद का समर्थन करती है। अपने पति के पास वापस लौटने के लिए वह तैय्यार नहीं है। "मुक्त प्रयोग" कहानी में नायिका अपने पति को छोडकर नौकरी करती है, और पति शैईलेन भटकते रहता है। प्रमीला नामक युवती उससे शादी करना चाहती है।

"कष्ट", कहानी में पति पत्नी दोनो है परंतु पति पत्नी से पैसो को अधिक चाहता है। इस बात से प्रमिला घुटन महसूस कर रही है।

"बेकार", कहानी में पति-पत्नी एक दूसरे को सोचने विचारने वाले हैं और एक दूसरे को जरूरतोंको समझकर लेते है। "झमेला" कहानी की सुषमा विवाहित होकर भी अपने पति के साथ रहना नही चाहती, शराब पीती है, क्लबों में घुमती है। उसे अपने पति की जरूरत नहीं है।

" वे दो", कहानी की नायिका द्रौपदी अपने सम्बन्धो को गोपनीय रखकर द्वंद्व की स्थिति से गुजरती है और पश्चाताप करती है। द्रौपदी द्विपत्नी बनकर रहना चाहती है। " वे दो", कहानी में लेखक ने सामाजिक प्रतिष्ठा कोही सर्वोपरि मानते हुए पत्नी के जीवित रहते हुए पुनर्विवाह का निषेध किया है।

अजीत विमला से विवाह करता है लेकिन उससे खुश न होने के कारण द्रौपदी से पुनर्विवाह करना चाहता है। लेकिन द्रौपदी के पिता रामकुमार अपनी बेटी को अजीत से पुनर्विवाह करने की आज्ञा नहीं देते। वे द्रौपदी से कहते है एक के रहते, दूसरी पत्नी नही हो सकती।

" छ: पत्र दो राहे" कहानी में प्रेम और विवाह की समस्या को उठाया है। विमला का विवाह उसके प्रियकर के साथ नहीं हुआ। वह अपने पति के साथ रहती है। लेकिन दिन रात वह अपने प्रियकर के बारे में सोचती रहती है।

"जीना मरना", लीलाधार और उसकी पत्नी सुखीया नामक बुढियाँ की सेवा करते है, परंतु उसकी मृत्यू बाद अंतिम संसार अस्पतालवालो से करने के लिए कहते है। "उलट फेर", कहानी में प्रमिला के पति की मृत्यू होने से वह बेसहारा हो जाती है। नौकरी करके वह

अपनी तथा बच्चों की परवरोश करना चाहती है।

" मुक्ति ", कहानी में श्री शांडिल्य और उनकी पत्नी मनोरमा तथा उनके अतिथी श्री·आर· नारायण के साथ बैठकर नारी को मुक्ति किस प्रकार मिल सकती है इसके बारे में सोच-विचार करती है, लेकिन उसका जवाब उसे नहीं मिलता और न मुक्ति मिलती है। इसी कारण वह अपने पतिपर नाराज हो जाती है।

जैनेन्द्रकुमारजीने अपनी कहानियाँ व्यक्तित्व, चिंतन एवं साहित्य की विशिष्ठता तथा अनुभूति और अभिव्यक्ति पक्ष की उत्कृष्टता के द्वारा हिन्दी कथा साहित्य को एक नवीन दिशा तथा दृष्टि दी है। जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों में सामन्य नारी पात्रों पर अहंवादी पात्रों, युग की प्रवृत्तियों का प्राधान्या अधिक है। परिस्थितिवश वह पापपूर्ण कृत्यों को करने के लिए भी बाध्य हो जाती है। विवाहोपरान्त भी पति को धोखा देकर प्रेमी के पास भाग जाने को प्रवृत्त रहती है। पति के पास रहते हुए भी प्रेमी से प्रेम करती रहती है।

" जैनेन्द्र कुमारजी के कहानियों में कुछ ऐसी भी नारियाँ है जो पति के दुराचरण करने पर आत्मव्यथा में घुटती रहती है। और उसी घुटनपूर्ण वातावरण में जीवन के शेष क्षणों को व्यतीत कर देती है। इसी प्रकार जेनेन्द्रकुमारजी ने अपने कहानियों में विवाहिता की द्विधावस्था को प्रस्तुत किया है। विवाह होने पर पतिसे प्रेम नहीं है । प्रियकर को मिलने की चाह है। लेकिन असंभाव है। इसी कारण जीवन भार घुटन महसूस करते रहती है।

४] नारीका प्रेयसी रूप :

जैनेंद्रकुमारजी की कहानियों में नारी प्रेयसी रूप में भी देखने को मिलती है

"प्रेम मनुष्य के जीवन की अमूल्य निधि है। प्रेम के विषय में जैनेन्द्रजी का अपना एक विशेष दृष्टिकोन है। नायिकाओं के चरित्र-चित्रण के समय उस दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का प्रयास किया ही है। नायिकाओं के साथ अन्य नारी चित्रण में भी प्रेयसी रूप की झाँकियाँ चित्रित हुई है।[१८]

"डॉ. शैलकुमार जी ने अपनी पुस्तक "आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी भावना" में नारी का दो रूपों में वर्गीकरण किया है सत् और असत् रूप। इस वर्गीकरण के अनुसार जैनेन्द्रजी की प्रेयसियों में सत् रूप तथा असत् रूप दोनों मिल जाते है।"[१९] प्रेयसी का सत् और असत् रूप जैनेन्द्र के अनेक कहानियों में हमें मिला है।

स्त्री-पुरुष का आकर्षण एक प्राकृतिक सत्य है। इसी आकर्षण पर सृष्टि का विकास अवलम्बित है। इसी लिए आदिकाल से ही नर-नारी के सम्बन्धों में प्रेमतत्वों को अनिवार्य माना है। प्राचीन कालसे हमारे समाज की यह मान्यता रही है कि नारी एक बार जिस पुरुष से प्रेम करती है, जीवन भर उसीको होकर रहती है। उसके जीवन की सार्थकताही उसके मीलनमें है। यदि परिस्थिति-वश प्रेमीसे उसका मिलन नही हो पाता है तो वह अपने जीवन को निरर्थक समझकर प्राणतक त्याग कर देती है। भारतीय प्रेमिका का

आदर्श पार्वती और सावित्री है जो कठिन से कठिन बाधाओं को अपने प्रेम के बल से जीत कर अपने प्रेमी का संयोग प्राप्त करती है।

जैनेन्द्रके कहानियोंमे ऐसी अनेक नायिकाएँ आति है जिनका विवाह अपने प्रियकर से न होते अन्य पुरुष से हुआ है। विवाह के बाद, पति को न चाहते वह विवाह पूर्व प्रियकर को चाहती है।

जैनेन्द्र के कहानीकी नायिकाएँ सभी मध्यमवर्ग की है। समाज और मान्यताओं में पत्नी, साधारण घरेलू, कम पढ़ी-लिखी नारियाँ हैं। घर गृहस्थी के दायित्वों एवं पति तथा परिवार को नैतिक आस्थाओं को भी स्वीकार करनेवाली है। मध्यवर्गीय सामाजिक चेतना के स्तर पर उनमें एक विशिष्ट वैयक्तिक चेतना की भी चरम परिणति उपलब्ध होती है। जैनेन्द्र के कहानियों की नायिकाएँ जीवन की विषम छोरों पर चलना पसन्द करती है। भले ही वहाँ समस्याएँ हो क्यों न उत्पन्न हो। वे समस्याएँ भी उन्हे सामर्थ्यवान और गतिशील बनाती है।

इन मध्यमवर्गिय नारियों में अपनी सामाजिक परिप्रेक्ष्यगत स्थितियों को भोगते हुए जिस निराशा, अनास्था, वैयक्तिक कुण्ठा आक्रोश एवं अतिवादी संकीर्ण दर्शन की परिणति प्रदर्शित की गयी है, वह फ्रायडीय मान्यताओं के आधार पर की गयी है।

जैनेन्द्र के नारी-पात्रों की सबसे बड़ी विचित्रता यह है कि उनके सभी पात्र अपने पति के अतिरिक्त पर पुरुष की ओर आकर्षित होते है। सामाजिक और गार्हस्थ जीवन का असन्तोष

भी इस प्रकार के फिाण्ग के लिए उत्तरदायी हो सकता है। परन्तु प्रधान रूप से इसका कारण यौवनाकर्षणहो है। विवाहिता होते हुए भी उनमें अपने पूर्व प्रेमी के प्रति आकर्षण रहता है।

जैनेन्द्र के कहानियों का हर पति अपने आपको सौभाग्यशाली मानता है कि उसे ऐसी सुयोग्य और सुन्दे पत्नी मिली, किन्तु इसके विपरित पत्नी के व्दन्व्द का मूल यही है कि, जीवन साथी उसके मनोनुकूल नहीं। जैनेन्द्र के कहानियों को नायिकाओं में पत्नीत्व कम प्रेयसीत्व प्रधान है। वह किसी पुरूष से प्रेम करती है, प्रेम की परिणति क्या होगी इसपर विचार नहीं करती लेकिन भावी घटनाएँ उसे प्रेयसी ही बनाकर छोड देती है। जैनेन्द्र की अनेक कहानियाँ है जिनमें नारी का हमें प्रयसित्वरूप निखार आता है। "फाँसी", कहानी में जुलेका पूलीस अफसर की लडकी जिसे साहबने जुलीरेबेका बना दिया है। जुली रेबेका खुबसुरत, पढी लिखी और समझदार युवती है। जुली के पिता पुलीस अफसर होने के कारण अपराधियों को पकड़ते है और सजा दिलाते है: लेकिन जुली में और उनके पिता में फर्क है, जुली अपराधोंका कारण जानती है। और ऐसे अपराधियों की मदत करना चाहती है। शमशेर एक मुजरीम है, लेकिन वह अपराध करके गरीबों की मदद करता है, इसी बात से जुली रेबेका अपराधी शमशेर को चाहती है और उसे बचाने की कोशिश करती है। परंतु शमशेर जुली के प्यार को समझता नहीं है, और न वह प्यार करना चाहता है। और फाँसी के तख्तपर खडा हो जाता है। इस बात से जुली रेबेका अपने प्रेम में असफल हो जाती है। शमशेर के फाँसी के बाद वह हर समय रोते बैठती है।

" स्पर्द्धा ", कहानी में इस दृष्टिसे उल्लेखनीय है, जिस की रचना लेखकने भारतके क्रांतिकारी नवयुवको कों प्रेरणा तथा आत्मबल देने के उद्देश्य से की थी। इस कहानी में मैरिश्ट एक कलाकार युवती है, लेकिन अपने देश के स्वतंत्रता के लिए वह काम करना चाहती है, और इसी समय बेंजिलो पथ प्रदर्शक बनकर उसके जीवन में आ मिलता है। मैरिश्ट सुंदर है, कलाकार है, उसका यौवन जब प्रमत था स्वीकृति चाहता था तब उसे ठेस पहुँचती है। अब वह सिर्फ देश के लिए जीना चाहती है। मैरिश्ट बेंजिलो से प्यार करती है। लेकिन गिडिटो उसे चाहता है, और एक दिन गिडिटो बेंजिलो का खून कर देता है।

" जयसन्धि ", कहानी में यशो विजयकी प्रेयसी यशस्तिलका विवाहोपरान्त भी अपने पूर्व प्रेमी के लिय इस सीमा तक समर्पित होती है कि पति को बलि देने में भी उसे संकोच नहीं है। "दो चिड़ियाँ कहानी की प्रतीकात्मकता द्वारा नारी और पुरूष के आकर्षण तथा प्रेम को ही दर्शाया गया है। प्रिय के पासपुन: लौटने की आशा के कारण तथा उससे संयोग की इच्छा के कारण चिड़ियाँ अपनी माँ को छोडकर अपने प्रेमी के पास ही लौट आती है।

प्रेम कहानियों मे अक्सर ऐसा होता है कि प्रियकर और प्रेयसीसे विवाह नहीं होता वह जीवनभर बिछडके रह जाते है, लेकिन जैनेन्द्र के "घुंघरू" कहानी की नायिका उर्मिला एक विवाहि स्त्री है, जिसे उसका पति बहुत प्रेम करता है। जिस प्रेम से वह उब गयी है, पढी लिखी है, होटलो में रहकर पतिसे छुटकारा पाती है, और पैसेवाले प्रियकर के साथ जीवन की रंगरलीया मनाती है।

"रेल में" कहानी में लेखकने एक चरित्रहीन मनुष्य की गृहिणी का नग्न रूप दिखाया है जो पतिके होते हुए भी अन्य व्यक्तियोंके साथ घूमती रहती है। उसका न कोई पति है न कोई सच्चा प्रेमी। हर किसी के समक्ष वह आत्म समर्पण करती है। उसके चरित्रमें दृढता की अपेक्षा दूर्बलता का प्राधान्य है।"

" संबोधन", कहानी में किशोरी नामक एक सोलह वर्ष की युवती है। कहानी तथा उपन्यासों के बहाने वह शंकर से मिलना चाहती है, क्यों कि वह शंकर को चाहती है। लेकिन शंकर उसके प्यार को समझ नहीं रहा है।

" जान्हवी " प्रेम और पीर की कहानी है, विरह की गद्य-गीतिका है, ऐसे प्रेमयोग की गाथा है, जिसका सत्य समाज को खलता है, लेकिन व्यक्ति को बदल देता है। प्रेम के विप्लवकारी प्रभाव के अतिरिक्त सहानुभूति के सामंजस की यह उत्कृष्ट गाथा है। लेखकने अनन्त मिलन को ही कहानी कही है, विवाह से विरत होकर नायिका पिया मिलन की आस का व्रत लेती है, और नायक भी अजिवन अविवाहि रहकर प्रिया को प्राप्त करने का व्रत लेता है।

" दृष्टिकोण " कहानी का नायक अपने स्त्री को केवल माया नहीं समझता , उसे स्त्री ही समझता है जिसका अपना व्यक्तित्व है, जो सन्तान के बाद भी अपने पुराने प्रेम को नहीं भुला सकती। सुभद्रा विवाहित है, उसके बच्चे भी हैं, फिर भी अपने पुराने प्रेमीको देखकर वह अपना संतुलन खो देती है और उसकी वाणी मर्मबोधिनी होती जाती है।

" पूर्ववृत्त " कहानी में लेखकने प्रेम की महत्ता को बढावा दिया है। प्रस्तुत कहानी की नायिका प्रशांत से प्रेम करती है, लेकिन इन दोनो का विवाह नहीं होता। प्रेम में शक्ति है, इसी कारण इसमें समर्पण भी महान है।

"परावर्तन" शीर्षक कहानी की नायिका शीला अपनी सखी मालती को लिखे पत्र में स्त्री के प्रति अपनी इस अभिवृत्ति का उद्घाटन करती है, "बहन, स्त्री की कुछ न पूछो। मैंने सोचा था कि डिगूँगी नहीं, पर परमात्मा भला किस को रखाता है और स्त्री तो टूटने के लिए ही बनी है।." "यहाँ स्त्री स्वयं यह अनुभव करती है कि विधाता ने उसे दुःख और विपत्तियाँ सहने के लोप ही बनाया है।"[20]

" परदेसी " प्रश्नोत्तर शैली में लिखित कहानी है, जिसमें प्रेम की पावनता वियोग में ही सिध्द की गयी है तथा पवित्र मिलन की ओर संकेत किया गया है। महिला एवं परदेसी के क्षणिक प्रेम को व्यक्त करके लेखक ने प्रेम में उदात्त स्वरूप को ही व्यक्त किया है।

"एकरात" कहानी में सामाजिक नियमों को महत्त्व न देकर प्रियकर तथा प्रेयसी को अधिक महत्त्व है। सुदर्शना यद्यपि विवाहित है, लेकिन तीस वर्षीय अविवाहि जयराज से उसका प्रेम सम्बन्ध लेखकने स्थापित किया है। जयराज नायक के अनुसार प्रेम का एक क्षण भी अनन्त है । सत्या जीवन का क्षण भी शाश्वत है। प्रेम को लेखकने ईश्वरमय ही माना है, इस प्रकार जैनेन्द्रकुमारजी विवाहित जीवन में भी विवाहेत्तर प्रेम की आवश्यकता पर बल देते है।

" ध्रुवयात्रा " कहानी में लेखकने प्रेम की महानता को व्यक्त किया है। जहाँ प्रेमिका पति के संयोग को नहीं तो उसके स्वप्न की ध्रुवपूर्णता को ही आकांक्षा करती है। पतिसे उसके स्वप्न को महता अधिक है। वह विवाह को अधिक महत्ता नहीं देती।

" प्रतिभा " कहानी में अकेलेपन भोगनेवाली नारी की करुण कथा है, जो अपने यौवन के कारण पश्चाताप करती है, वह न किसीसे विवाह करती है और न किसी प्रेमी के साथ प्रेम करना चाहती है।

"दुर्घटना " कहानी में हरीश अनुभाव करता है कि विश्व का सम्पूर्ण आकर्षण सौन्दर्य और सार नारी में ही समाया है। वह प्रमीला के तल्लीन मुखपर आँखे जमाकर जीवन के महान उद्देश्य को टटोलता है और प्रमीला की आँखे चोट दे देकर उसे यही सूचना देती है कि "जो स्पृहणीय है वह इस नारी में ही है उसके बाहर होकर शायद कहीं भी कुछ और नहीं है।

" मीठीखीझ " कहानी में विमल और ज्योत्स्ना की प्रेम कहानी है। प्रेमी और प्रेमिा के एक दूसरे के प्रति प्रेम का वर्णन है। विमल और ज्योत्स्ना के मन में कभी एक दूसरे के प्रति तिरस्कार की भावना उत्पन्न हो जाती है। मनो वैज्ञानिक रूपसे यह सही है कि जिस व्यक्ति के साथ अत्याधिक प्रेम हो उसे तडपाने में भी उतना ही आनन्द व्यक्ति प्राप्त करता है।

"प्रियव्रत "`कहानी में लेखकने आर्थिक स्थितिको स्पष्ट किया है। प्रियव्रत जब कॉलेज में था तब वह कविता लिखता था। किसी युवती से प्रेम करता था, लेकिन उसी युवतीने प्रियव्रत को

आर्थिक स्थिति को देखकर प्रियव्रत को धोका दिया है। अब प्रियव्रत का विवाह हो चुका है लेकिन वह एक-एक दिन शराब में डूब जा रहा है।

" टकराहट" कहानी एकांकी के रूप में लिखित कहानी है। प्रेम और विवाह सम्बन्धी पर प्रकाश डालती है। इस कहानी में लिला और कला दो युवती है, लिला प्रेम करना चाहती है लेकिन विवाह से नफरत करती है।

" कुछ उलझन" में भी लेखकने प्रेम को दिव्यता त्याग में स्वीकार की गयी है, विवाह में नहीं। पति की अत्यधिक उदारता पत्नी को प्राप्त है और वह पूर्व प्रेमी के लिये विवाहोपरान्त भी समर्पित है।

" त्रिबेनी" कहानी की नायिका विवाहोपरान्त पूर्व प्रेमी को न भुलाने के कारण कुंठित रहती है, तथा प्रेमी को देखने की आशा पूर्ण न होने के कारण अपने कर्तव्यों की ओर उन्मुख होती है।

" प्यार का तर्क" में लेखक ने विवाह और प्रेम को भिन्न-भिन्न आलोक में देखा है तथा प्रेम की परिणति विवाह में स्वीकार नहीं की है। प्रेमी तथा प्रेयसी का विवाह हो चुका है परंतु अब भी दोनों को एक दूसरे का चेहरा नजर आता है।
" ये पत्र" कहानी में प्रेम सम्बन्धी मान्यताओं पर प्रकाश डाला गया है। पती पत्नी और वह वाली कहानी है। विवाह होने पर भी पूर्व सम्बन्धी को जीवित रखा है। "सहयोग" कहानी की नायिका शारदा जिसका विवाह हो चुका है परन्तु उसे अपने पति

से रुचि नहो है। विवाहोपरान्त भी पूर्व सम्बन्धोंपर टीको है। " प्रमिला " कहानी में कहानी का नायक नायिकासे इसलिए मिलना नहीं चाहता की उसके प्रेयसी के जीवन में बाधा उत्पन्न हो जाए। परन्तु इस बात की प्रमिला को कोई चिन्ता नहीं है। "प्रणयदंश" में प्रेम की दिव्यता को स्पष्ट करते हुए प्रेम-विवाह का विरोध किया गया है। इस कहानी की नायिका सविता अपना प्रियकर प्रद्युम्न से दूर रहना चाहती है।

" वहरानी " कहानी की नायिका बुढी हो गयी है, फिर भी वह अपने प्रेम को भूल नहीं पाई। प्रेमी आर्थिक सहाय्यता करना चाहता है परंतु वह लेने से इन्कार करती है। स्वयं यातनाएँ भोगती है।

" अमिया तुम चुप क्यों हो गई ? इस कहानी में प्रेम, सेक्स और विवाह सम्बन्धी मान्यताओं पर केन्द्रीत कहानी है। इस कहानी में लेखकने प्रेम और शारीरि सम्बन्धो को स्वीकार नहीं किया है। कहानी की नायिका अमियाँ अपने प्रेमी अमिताभ के साथ उसी सीमातक सम्बन्ध बनाए रखना चाहती है, जिस सीमा तक इन सम्बन्धों में शारीरिकता का निषेध है। प्रेम की शक्ति उसकी सच्चाई और पवित्रता पर है। यही प्रेम मनुष्य को मनुष्यत्व के धरातल से उठाकर देवत्व के धरातल पर प्रतिष्ठित करता है।

" अ-विज्ञान " कहानी की नायिका शरिर सम्बन्धो को मानती है। लेकिन कहानी का नायक आदित्य प्रेम से उत्पन्न वियोग और टीस को ही महत्त्वपूर्ण मानता है। उसकी दृष्टि में शारीरिक भोग भी उस टीस से उत्पन्न सुख और प्रेरणा की बराबरी करने

में असमर्थ है। आदित्य विवाहित है और मालती भी विवाहित है, लेकिन पूर्व प्रेमी की चाह अब भी है।

"दो सहेलियाँ" कहानी दो सहेलियों के सान्निध्य को चित्रित करती है। वसु और जसु दोनों के व्यक्ति-व्यक्ति सम्बन्ध है, इसलिए प्राथमिक समूह के अन्तर्गत रखी जा सकते है। दोनो एक दूसरे से बहुत प्रेम करती है। जसु अकेली रहती है, लेकिन वसुका पति उसे बेहद प्यार करता है। पति की अत्यधिक चाहतसे पीड़ित वसु अपनी सहेली जसु के पास आकरही सुकून की साँस ले पाती है।

"यथावत" कहानी की नायिका मनोरमा प्राइमरी स्कूल में अध्यापिका है। अपने पुत्र के पाठशाला का खर्च वह निभा नहीं पा रही है, इसलिए वह अपने पुराने प्रियकर के पास जाकर अपने प्रेम का अहसास बताती है। और जिस के कारण उसने एक पुत्र को जन्म दिया था उसी पुत्र के पढाई का भार प्रियकर पर सौंप देती है। उसका पुत्र उसे वापस लौटाती है।

"मुक्त प्रयोग" कहानी का नायक शेडलेन ने अपने पत्नी को छोड दिया है। वह नौकरी करके अपना गुजारा करती है। लेकिन प्रमिला अपने पैसों के बलपर शेडलेन से विवाह करना चाहती है, उसके साथ, होटलों में घुमती है। शेडलेन का विवाह होनें पर भी वह उससे विवाह करना चाहती है।

"झमेला" कहानी की नायिका विवाहित होने पर भी अपने पति के साथ रहना नहीं चाहती क्लबों में जाती है। शराब पीती है। शराब के नशेंमें किसी भी पुरुष के साथ घुमना पसंद करती है।

" वे दो " कहानी में लेखकने यह अभिव्यंजित किया है कि सामाजिक नियमों, नीतियों और मर्यादाओं को हर मूल्यपर बनाए रखना अनिवार्य है।

" छ: पत्र दो राहे " कहानी में प्रेम और विवाहकी समस्याको उठाया है। नायिका विमला विवाहित होने के बावजूद भी अपने प्रियकर के साथ पत्र व्यवहार करती है। प्रियकर को मिलने की तडप उसमें अब भी है।

इसी प्रकार जैनेन्द्रकुमारजीने अपने कहानियों प्रेयसी के अनेक रंगभरे हैं। विवाहित है फिरभी प्रियकर को मिलने कि तडप मन में है। कुछ कुछ कहानियोंमें नायिकाएँ बुढी हो चुकी है। फिर भी प्रियकर की यादों के सहारे जीना चाहती है। परन्तु लेखक के विचार ये है कि प्रेम की प्राप्ति विवाह में नही होना चाहिए। प्रेम को अधुरा छोडने में छोडनेवाले काक देवत्व प्राप्त होता है। यही बात लेखकको कहना है।

सभी कहानियों को नायिकाओं के प्रेम की तडप देखकर जैनेन्द्रके कहानियों के नायिकाओं को तथा उनके प्रियकरों को पवित्रता के बारे में जितना सोचेगें उतना कम है। प्रेयसी को अपने प्रियकर को पाने के लिए चाहे कितनी भी यातनाएँ सहनी पड़ी फिर भी उसका उसे दु:ख नहीं है। उसने अगर मन में ठान लिया तो आनेवाली हर एक कठीनाई का सामना करने की हिम्मत उसमें है। अपने प्रियकर को पाने के बाद वह किसीका भी डर मन में नही रखती है, चाहे समाज का, पति-का, समाजके नियमोंका अपने जिद्द पर अड़ीग रहती है। जैनेन्द्र के कहानियों में ऐसे अनेक प्रकार के नारी प्रेयसी के रूप देखने मिलते है।

नारी का भगिनी रूप :

जैनेन्द्रकुमारजी की कहानियों में नारी के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। माँ, पत्नी, देवी, प्रेयसी, उसी प्रकार उनकी कहानियों भगिनी रूप भी उध्दृत होता है। एक ही माँ की सन्तान होने के कारण भाई बहनों को परिवार में बचपन से ही समान वातावरण और संरक्षण मिला है। हिन्दी साहित्य में अनेक उपन्यास तथा कहानियों में भाई, बहन, माँ आदि पारिवारिक सदस्यों का संबंध रहा है।

जैनेन्द्रकुमार जी की कहानियों में भी अन्य पात्रों के साथ नारीका भगिनी रूप भी उभर आया है। "स्त्री का नाम जिस कारण से माननीय हो उठा है, उतनाही कारण है कि वह केवल भगिनी हो, भगिनी मानो उसका सामाजिक रूप नही उसका प्रकृत रूप ही है।" इसी प्रकार जैनेन्द्र की कहानियों "एक दीन" कहानी में नायक की बहन अपने घर की हालात को समझाकर उसी तरह स्वयं रहने की कोशिश करती है। "परावर्तन" कहानी में मालती शिला की बहन है, शिला के सुख दु:ख को समझाकर संसार और गृहस्थी समझाती है ।

"पानवाला" कहानी में नायक की बहन नायकके गैर हाजरी में पानवालेसे चुपकेसे मिलती है, और पान खाती है। "आलोचना" कहानी नायक वीरेन की बहन देश सेविका के रूपमें उध्दृत होती है। देश के प्रति अनेक यातनाएँ सहनेको उसमें शक्ति है।

"वह क्षण" कहानी में तेइस वर्ष की नायक की बहन है, जिसेक विवाह के बारे में माता-पिता का विचार शुरू है। इसी प्रकार "आवर्त" कहानी में नवाब साहब की दो बहने है, एक कॉलेज में पढती है। जिसका नाम है जोहरा।

"विचार शक्ति" कहानी में लेखकने यह प्रस्तुत किया है कि स्त्री भगवान के प्रतिश्रध्दा अधिक रखती है। भगवान के साथ-साथ, साधु संतोपर भी उनका विश्वास दूढ रहता है। सभी स्त्रियों के साथ बहन का रूप भी उधृत किया है। "वे दो" कहानी के नायिका की बहन अपने जिजासे विवाह करना चाहती है। अपने बहन को सौत बनना चाहती है।

५] नारी का लडकी रूप :

जैनेन्द्रकुमारजी के कहानियों में परिवार के सदस्योके अनेक रूपों की झाँकियाँ देखने मिलती है। कहानियों में अन्य पात्रों के साथ नारी का लडकी रूप भी प्रस्तत होता है। "जनता" कहानी में मास्टर दीनानाथजी की ग्यारह वर्षकी लडकी सुखदा बाबा भगीरथजी के साथ घुमने जाती है लेकिन लोग समझाते है बाबा भगीरथ साधूने सुखदा को उठा लाया है। इसी प्रकार लेखकने एक अनुठा उदाहरण दिया है।

"खेल" कहानी में बालक और बालिा खेल रहे हैं। खेल में झगडे हो जाते हैं। बालिका रूठ जाती है। उसे मनाने बालक मिट्टीका घर बनाकर देता है। बालिका हँसती है। "दो चिड़ियाँ" प्रतिकात्मक कहानी है। छोटी चिडियाँ को माँ संभालती है, पालती

है, परंतु छोटी चिड़ियाँ बडी होनेपर अपने प्रियकर के पास ही लौटती है। वह अपने माँ के पास नहीं जाती। माँ को वही छोड देती है।

"पढाई" कहानीमें सुनयना अपनी लडकी को पढ़ाना चाहती है। पढ़ाई व्यक्ति की अभिरुची नहीं सामाजिक नियम तथा सामाजिक अभिवृत्तियों का भी उज्ज्वल रूप है। "बिल्ली बच्चा" कहानी में लेखकने यह बताया है की लडकियों मे मातृत्व की भावना बाल्यावस्था से ही होती है। "संबोधान" में कहानी में किताबों के माध्यमसे शंकर को मिलने के लिए किशोरी आती है। "जान्हवी" में जान्हवी नामक लडकी को देखकर जीजा विवाह के लिए उत्सुक हो जाते हैं। दृष्टिदोष में सुभद्रा नामक लडकी है, जिस को लेकर विवाह का सोच रहे हैं। ब्याह कहानी की ललीता घर की हालात देखकर बढई के लडके साथ विवाहकर देती है, और सभी सवालोंको हल कर देती है।

"नादीरा" की माँ नादीरा के विवाह के बारे में कभी सोचती नहीं वह चाहती है लडकीसे बहुत पैसा कमायें उस पैसे के लिए कुछ भी देदे। "अन्धीका भेद" कहानी में माँ चली जाने के बाद अन्धीकी पूरी देखभाल लडकी करती है। "वह क्षण" कहानी में नायक की एक तेइस वर्षीय बहन है जो माता पिता की लडकी जिसे लेकर समस्या खडी कर दी है।

"वह रानी" कहानी का नायक जिसने तरह वर्ष पहले एक लडकी को देखा था, जो अभिभी उसे भूला नहीं है। "बीमार" कहानी में लडकी पति के घर जाती है और बिमार पड जाती है,

माँ उसे पति के घर जाने से मना करती है। "येदो" कहानी की लडकी पढी-लिखी है। जिसे उसके पिता समझाने का अधिक प्रयत्न करते है। "महा महिमा" कहानी में उषा अपनी माँ का अधिक खयाल रखती है। समयपर औषधी देती है। परंतु माँ औषधी पीती नहीं। "पाजेब" कहानी में सोला, मुन्नी आदि पडोसन की लडकीयाँ है जिन्हे पाजेब गुम हो जाने के कारण कहानीकी नायिका पूछती है।

६] नारी का भाभी रूप :

परिवार के सदस्यों में अगर माँ की जगह की कमी होगी तो उसकी जगह भाभी लेती है। घर का कारोभार, देखभाल पढाई, बच्चों का खयाल आदि बातें बडे भाई की पत्नी याने भाभी लेती है। अपने पति के साथ-साथ देवर, सास, ससुर, बच्चे, जेठानी आदि को सम्भालने की जिम्मेदारी भाभी की होती है। कभी-कभी परिवार में कुछ झगडे होते हैं, कभी हसी मजाक होती है, कभी दु:ख के भी क्षण उभरते है, इन्ही सभी परिस्थितियों में हँसी-मजाक, खिलवाड करके रहना पडता है। नारी का स्वभाव अगर वैसा हो तो वह सभी परिवार की प्यारी भाभी होने के लिए अधिक समय नहीं लगता।

घर के नियम, रीतिरिवाजों के साथ-साथ उसे सामाजिक नियमों का भी पालन करना पडता है। इन्ही सभी बातों का नियमों का उल्लंघन होने लगा तो। सभी परिवार फिसल जाता है। परिवार की रीढ़ की हड्डी भाभी होती है।

जैनेन्द्रकुमारजी कहानियों में भी नारी भाभी का रूप लेकर उभरती है। "भाभी" कहानी की भाभी भी ऐसी है, जो अपने परिवार को संभालने का प्रयत्न करती है। इस कहानी में सामाजिक मान्यताओं को चुनौती दी गयी है। इसमें सामाजिक मानदण्डों की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। जिनके अन्तर्गत भाभी और देवर के प्रेम को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं है।" इसे सदा सामाजिक विधान का उल्लंघन समझा जाता है।"

"राजीव और भाभी" कहानी में समाज व्दारा अस्वीकृत देवर-भाभी के सम्बन्धों की कहानी है जिसमें पुराने मूल्यों और रूढीगत परम्पराओं को चुनौती दी गई है।

"रूकिया बुढीया" में चम्पी नामक नारी भाभी के रूपमें कहानी में आती है। प्रस्तुत कहानी में नारी समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

"बिखारी कहानी में स्वर्गीय डी.पी.सेन की पत्नी को लेखक भाभी मानता है। भाभी के सहाय्यता से ही लेखकने सेन`के कागजात छान लिये और बिखारी हुई कहानी को पूरा किया।

"प्रण और परिणाम" कहानी की नायिका प्रमिला अपने देवर का विवाह तय करने के लिए अनेक प्रयत्न करती है, लेकिन देवर मानता नहीं है। फिर भी भाभी के रूप में प्रमि-ला देवर को मनाना नहीं छोडती।

"निश्शेष" कहानी की नायिका शारदा जिसे पतिघर से निकालता है। पन्द्रह वर्षतिक वह उसे स्वीकार नहीं करता है।

लेकिन शारदा नौकरी करती है, पैसे कमाती है, यह बात पति को समझाने पर उसे मनाने आता है, साथ में अपने भाई को भी लेकर आता है। जो शारदा भाभी को साथ चलने के लिए मिन्नते करता है। परंतु शारदा कभीभी तैय्यार नहीं होती।

"येदो" भारतीय समाज को उन मान्यताओं को उजागर करती है, जिनके अन्तर्गत व्यक्ति को अपनी पत्नी के जीवित रहते दुसरा विवाह करने की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं है। इस कहानी विमला घर के व्यवहार संभाल लेती है, सबकी सेवा करती है। द्रौपदी उसी परिवार की एक सदस्या है, परंतु विमला के पति के साथ वह विवाह करना चाहती है, और विमला को भाभी कहकर संबोधाती है। इसी प्रकार जैनेन्द्र के कहानियाँ उभारनेवाली नारी अनेक रूपों के साथ भाभी के रूप में भी उभरती है। अपने परिवार में संतोष, शांति रखने का प्रयत्न करती है।

७] <u>नारी का दादी रूप</u> :

परिवार का इतिहास दादी को ही मालुम रहता है। वह अपने बचपन की बांते पुरखों की बांते तथा सभी परिवार के सद्स्यों की जानकारी दादी को ही मालुम होती है। परिवार में दादी मीठी-मीठी कहानियाँ सुनाकर बच्चों को लुभानी बच्चो को लुभानी है। शायद दादी का कामही वहीं रहता है। जैनेन्द्र के कहानियों में भी हमें नारी का दादी रूप दिखाई देता है।

"तमाशा," रामु की दादी" आदि कहानियो में नारी का दादी रूप उभर आया है।

८] नारी का मामी रूप :

परिवार के सदस्यों से रिश्ते बढते जाते है। वे कभी खात्म नहीं होते जैनेन्द्र के कहानियों में भी नारी अनेक रूपों में आती है। परंतु कुछ कहानियों में मामी के रूप में पेश आती है जैसे, "चोर" माया मामी, वह रानी आदि कहानियों में मामी का रूप उभर आता है ।

९] नारी का विधवा रूप :

नारी का विवाह होने के बाद सभी सुखों और दु:खो के साथ पति के साथ ही सहना पडता है। अगर पति न होतो वह कहीं को नहीं रहती है। जैनेन्द्र के कुछ कहानियों में विधवा नारी का रूप भी प्रस्तुत हुआ है जैसे चोरी, क्याहो ? आवर्त, व गवाँर दो सहेलियाँ, सजा वह रानी आदि कहानियों में विधवा का रूप निखार आया है।

जैनेन्द्र के कहानियों में प्रस्तुत होनेवाली नारीयाँ यह मध्यम वर्ग की होती हैं। कभी कभी उन्हें स्वयं नौकरी, मोलमजदूरी करके दो वक्त की रोटी तथा अपने बच्चों को पालना पोसना पड़ता है। ऐसी भी कुछ नारियाँ हैं जो हमें अध्यापिका, परिचारिका, मोलमजदूरी, नौकरी, महरी, बर्तन माँजनेवाली आदि अनेक प्रकार की नारियाँ कहानी में देखने मिलती है।

१०] स्वावलंबी नारी का रूप :

मध्यम वर्ग की नारियाँ होने के कारण अपने परिवार को

संभालने के लिए काम करना पड़ता है, फिर भी कहानियों की नारीयाँ जीवन से पलायन नहीं करती वह किसी भी परिस्थिति का सामना करती है, उसमें हिम्मत है। जैनेन्द्र के कहानियों में कुछ नारियाँ ऐसी है जो इन कहानियों में प्रस्तुत होती है । जैसे पाज़ेब कहानीमें रूकमनी, बीडट्रिस कहानी में परिचारिका, भूत की कहानी में महरी, नौकरानी, इक्के में इस कहानी में दिनभर मोलमजदूरी करनेवाली स्त्रियाँ मानरक्षा कहानी में नोकरी करनेवाली स्त्री, अभागे लोग कहानी में अनपढ मेहनती मजदूरी करके पेट भरनेवाली स्त्रियाँ, आवर्त कहानी में नौकरानी, महामहिम की परिचारिका, यथावक्त कहानी की अध्यापिका, आदि नारियाँ हालात के साथ समझौता करके खुद पैसा कमाती है, और जीवन में आनेवाली समस्याओं को सुलझाती है।

११] नारी का व्यभिचारिणी रूप :

जैनेन्द्रकुमार की कहानियोंमे सभी नारियाँ मध्यम वर्ग की है; उनमें कुछ स्वालंबी बनकर अपना तथा अपने परिवार का बोझा स्वयं उतारती है परंतु कुछ नारियाँ ऐसी है जो मोलमजदूरी नहीं करती क्लबों में होटलोमें किसी भी पुरूष के साथ घुमती फिरती है। वह कभीभी समाज के रीति रिवाज, का पालन नहीं करती। ऐसी कुछ कहानियाँ जैनेन्द्रने प्रस्तुत की है। जैसे "लाल सरोवर" कहानी में कोठोन वेश्या, "रेल में" कहानी में नायक के साथ इर्द-गिर्द घुमनेवाली स्त्री कुलल के रूप में प्रस्तुत होती है। निस्तार कहानी में दुराचारिणी, अन्धोका भेद में वेश्या के रूपमें, विज्ञान कहानी में वेश्या, मॉडेल आदि अनेक रूपो में कहानी की नायिकाएँ तथा उपनायिकाएँ अपना अलग अलग रूप लेकर उपस्थित होती है। "चालीस रूपये" कहानी में नायिका

व्यभिचारिणी के रूप में उपस्थित होती है। नारी एक ही है लेकिन उसे अलग-अलग रूपों में दिखाया गया है। वह कभी समाज के नियमों के अनुसार रहती है, तो कभी समाज के नियमों का उल्लघांन करती है। इसी कारण उसे अलग अलग दृष्टि से देखा जाता है।

जैनेन्द्र ने आपने कहानियों में उसे कहीं पर भी छोडा नहीं है। कभी वह सहेली के रूपमें तो कभी समाजसेविका के रूपमें तो कभी कुमारी माता के रूपमें तो कहीं पर गरीब बेबस के रूप में प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार जैनेन्द्रने अप्सरा, नृत्यांगना, बुध्दि, धृति, अहं, धैर्य, राजकुमारी, किन्नरी, जीवात्मा, ब्रहम आदि में भी नारी का रूप पाया है। रिश्तो के रूपों में देखा जाय तो देवी, पत्नी, माता, बहन, मामी, नानी, चाची, दादी, सास बहू आदि रूपों में भी कहानी में नारी व्यक्त होती है।

संक्षेप में जैनेन्द्र के कहानियों में चित्रित नायिका तथा नायिकेत्तर नारी पात्रों का विवेचन इस अध्याय में करने का प्रयत्न किया है। जैनेन्द्रकुमारजी कहते हैं कि इने-गिने पात्रों से उनका काम चलता है पर इन-इने गिने पात्रों का चरित्र अधिक सुस्पष्ट करने के लिए अनेक विविध पात्रों का चरित्र उन्होंने पार्श्वभूमि के समान किया है। कहानियों के पार्श्वभूमि के कारण कहानियों के नायिकाएँ तथा उपनायिकाएँ आयी हुई है। उनमें हरेक का अपना स्वतंत्र वैशिष्ट है।

जैनेन्द्रकुमारजी ने सूक्ष्मतासे उन रूपों का रेखाकंन किया है। इतने नारी-पात्रो में एक नारी-पात्र दुसरे नारी पात्र के जैसा

ही है तथा नारी जीवन के विविध रूपों को लेकर उन्होंने व्यक्ति की विभिन्नता का सूक्ष्मतासे चरित्र-चित्रण किया है, यही तो जैनेन्द्रजी की लेखनी की विशेषता है।

तृतीय अध्याय

संदर्भ

१] डॉ. मठपाल सावित्री : जैनेन्द्र के उपन्यासोमें नारी पात्रा पृ.कृ. १४

२] डॉ.मठपाल सावित्री : जैनेन्द्र के उपन्यासोंमें नारी पात्रा पृ.कृ. १५

३] डॉ.बिन्दु अग्रवाल : हिन्दी उपन्यासो में नारी चित्राण पृ.कृ. २८८

४] वर्मा महादेवी : शृंखला की कड़िया पृ.कृ. १६

५] जैनेन्द्रकुमार : कल्याणी पृ. कृ. ६२

६] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग पहला पृ.कृ. १

७] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग दुसरा पृ.कृ. १

८] जैनेन्द्रकुकार की कहानियाँ : भाग दुसरा पृ.कृ.८१

९] डॉ.मठपाल सावित्रि : जैनेन्द्र के उपन्यासो मैं नारी पात्रा पृ. २२

१०] डॉ.राजकुमार निरजा : जैनेन्द्र कथा साहित्य पृ.कृ.४७

११] डॉ.राजकुमार निरजा : जैनेन्द्र कथा साहित्य पृ.कृ.४८

१२] डॉ.शर्मा शाकुन्तला : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मुल्यांकन पृ.कृ. ५०

१३] डॉ.राजकुमार निरजर :: जैनेन्द्र का कथा साहित्य पृ.कृ.५१

१४] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग चौथा पृ.कृ.४६

१५] डॉ.शर्मा शाकुन्तला : जैनेन्द्र की कहानियाँ एक मुल्यांकन पृ.कृ.८२

१६] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग पाँचवा, मोठी खोड़ा, पृ.कृ. १३२२

१७] डॉ.राजकुमार निरजा : जैनेन्द्र का कथा साहित्य एक सर्वेक्षण पृ.कृ. ६

१८] डॉ.भिंगारकर सिन्धु : जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी चित्राण पृ.कृ.

१९] डॉ.भिंगारकर सिन्धु : जैनेन्द्र के उपन्यासों में नारी चित्राण पृ.कृ.

२०] जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ : भाग चौथा पृ.कृ. १३५